CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

8.2

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

6

ज्ञान सरोवर

आर्य बुक डिपो करोल बाग, नई दिल्ली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्ञान सरोवर

भाग-6

(मनोरंजक, ज्ञानवर्धक एवं शिक्षाप्रद कहानियाँ एवं एकांकी)

श्री ४ श्रुति मिश्रा
कक्षा - 6

लेखक

हरिश्चन्द्र
बाल भारती पब्लिक स्कूल,
राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

श्यामजी गोकुल वर्मा
(राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता)

पूर्णतया संशोधित संस्करण

आर्य बुक डिपो
करोल बाग, नई दिल्ली-110005

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक :
आर्य बुक डिपो
30, नाईवाला, करोल बाग,
नई दिल्ली—110005

दूरभाष : 5721221, 5720363

ISBN—81—7063—086—X
ISBN—81—7063—089 —4 (Series)

© प्रकाशकाधीन सुरक्षित

चतुर्थ संस्करण : 1987
पंचम संशोधित संस्करण : 1988
संस्करण : 1990
संस्करण : 1991
संस्करण : 1992
संस्करण : 1993
संस्करण : 1994
संस्करण : 1995
पुनर्मुद्रण : 1996
पुनर्मुद्रण : 1997
संस्करण : 1998

मूल्य : 20.00

मुद्रक :
कैपिटल ऑफसेट, नवीन शाहदरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

भूमिका

कहानियाँ पढ़ने में बालक-बालिकाओं की सबसे अधिक रुचि होती है—मिठाइयों और खिलौनों से भी बढ़कर। जो कहानियाँ ज्ञान का भण्डार हों वे तो सोने-चाँदी के गहनों से अधिक मूल्यवान होती हैं। बहुत दिनों से ऐसी माँग की जा रही थी कि एक ऐसी पुस्तक माला तैयार की जाए जिसमें कहानियाँ ही कहानियाँ हों, उसी माँग का परिणाम है यह "ज्ञान सरोवर" पुस्तक माला। इसका यह छठा पुष्प आपके हाथों में है। जिसकी विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

1. ये कहानियाँ बहुत रोचक तथा मनोरंजक हैं।
2. मनोरंजकता के साथ-साथ ये ज्ञानवर्धक भी हैं।
3. प्रत्येक कहानी से कोई न कोई शिक्षा अवश्य मिलती है।
4. प्रत्येक कहानी का सम्बन्ध जीवन की किसी-न-किसी घटना से जुड़ा है जो दैनिक जीवन में व्यवहार-कुशल बनने की प्रेरणा देती है।
5. प्रत्येक भाग में सरलता से कठिनता कोई और तथा अज्ञात से ज्ञात की ओर सिद्धान्तों को सामने रखा गया है।

आशा है बच्चों को सदाचारी, व्यवहार-कुशल, कार्य-प्रवीण तथा देशभक्त बनाने में ज्ञान सरोवर का यह अक्षय भण्डार अनुपम सिद्ध होगा।

—प्रकाशक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहानी-क्रम

1. साहसी राजकुमारी	...	...	1
2. दया की देवी	...	...	7
3. तालाब की मछलियाँ	...	...	11
4. राजपूत का वचन	...	...	15
5. हलवाड़ा की रक्षा	...	...	24
6. सबसे बड़ा तप	...	...	28
7. वे मौत से खेले	...	...	34
8. माँ	...	...	40
9. बदला	...	...	45
10. चन्द्रहास	...	...	51
11. होनी है बलवान्	...	...	61
12. देश की प्रेरणा-शक्ति : इन्दिरा गांधी	...	...	69
13. धर्मबुद्धि और पापबुद्धि	...	...	74
14. रबिया	...	...	79
15. दयालु मिथिलेश	...	...	85
16. जिन पर हमें गर्व है	...	...	92
17. विराट की रक्षा	...	...	98
18. वीरता का सम्मान (नाटक)	...	...	104
अब बताओ	...	...	108

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1

साहसी राजकुमारी

बहुत समय पहले कुसुमपुर नाम की रियासत में राजा मानसिंह राज्य करते थे। उनके सुभद्रा नाम की एक रूपवती पुत्री थी जो उनकी एकमात्र सन्तान थी। वह चतुर, बुद्धिमती तथा तलवार चलाने में सिद्धहस्त थी। उसने माता के सौन्दर्य और पिता के शौर्य को उत्तराधिकार में प्राप्त किया था।

एक दिन अपनी सखियों के साथ वह उद्यान में सैर कर रही थी। सखियों में अनेक विषयों पर बातें हुईं। अन्त में उनमें

विवाह के बारे में भी बातें चल पड़ीं। एक सखी ने कहा, "मैं विवाह के बाद अपने पति को अपनी इच्छानुकूल चलाऊँगी।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्य सखियों ने भी अपनी बातें कहीं। राजकुमारी सुभद्रा ने कहा, "मैं तो अपनी वीरता से पति को वश में करके यह सिद्ध कर दूंगी कि स्त्रियाँ किसी प्रकार भी पुरुषों से कम नहीं होतीं।"

इस पर सखियों ने पूछा, "तुम किसके साथ विवाह करना चाहती हो ?" राजकुमारी ने उत्तर दिया, "ब्रह्मपुर के राजकुमार अमरसिंह के साथ।"

संयोग से, उसी समय ब्रह्मपुर का राजकुमार अमरसिंह आखेट करते हुए रास्ता भूलकर थका हुआ उसी बाग में एक वृक्ष के नीचे आराम कर रहा था। उसने छिपकर राजकुमारी सुभद्रा की बात सुन ली। उसने भी मन-ही-मन राजकुमारी सुभद्रा के साथ विवाह करने का निश्चय कर लिया।

ब्रह्मपुर लौटकर राजकुमार ने राजकुमारी सुभद्रा के साथ विवाह करने का निश्चय अपने पिता राजा समरसिंह को बताया। राजकुमार की बात मानकर राजा ने विवाह का संदेश लेकर अपना दूत कुसुमपुर भेजा। राजा मानसिंह ने भी इस सम्बन्ध को सहर्ष स्वीकार कर लिया। अमरसिंह और सुभद्रा का विवाह बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। सुभद्रा ससुराल में आ गई। राजकुमार अमरसिंह बाग में कही गई सुभद्रा की बात को भूला न था। वह राजकुमारी के कथन की सत्यता की परीक्षा लेना चाहता था। अतः उसने सुभद्रा को बिल्कुल अलग एक महल में रखा। राजकुमारी सुभद्रा अपने पति के उपेक्षा-भाव से चिन्तित थी। एक दिन वह मन्दिर गई और भगवान के सम्मुख मस्तक नवाकर उसने प्रार्थना की, "हे प्रभो! मेरे पति मुझसे अप्रसन्न हैं मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि ऐसी कृपा कीजिए जिससे कि मेरे पति का मेरे प्रति उपेक्षा-भाव दूर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हो जाए और हम सुखी जीवन व्यतीत कर सकें।"

अमरसिंह भी वहीं मंदिर में था। अपनी पत्नी की प्रार्थना सुनकर वह गुप्त स्थान से बाहर आया और बोला, "तुमने तो अपने पति को अपनी वीरता से वश में करने की बात कही थी। अब उसे सत्य सिद्ध करके दिखाना होगा।" पति के शब्द सुनकर सुभद्रा की समझ में सारी बात आ गई। पर उसने हिम्मत न हारी और अपने कथन को सत्य सिद्ध करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। वह चुपचाप मन्दिर से अपने महल को लौट आई। उसने अपने पिता को एक पत्र लिखा और मोड़कर उसे अँगूठी के नग के नीचे छिपा दिया तथा अपने एक विश्वास-पात्र सेवक के द्वारा अंगूठी को पिता के पास भेज दिया।

उसके पिता मानसिंह ने अंगूठी से वह पत्र निकाल कर पढ़ा, "पूज्य पिताजी, मैं संकट में फँस गई हूँ। कृपा करके आप एक अच्छी तलवार, एक कवच और एक तीव्रगामी घोड़ा मेरे पास भेज दीजिए।" पिता इस लेख का कोई तात्पर्य तो न समझ सके, पर उन्हें अपनी पुत्री के चातुर्य पर विश्वास था। अतः उन्होंने सब सामग्री भेज दी। सुभद्रा के निर्देशानुसार ही उन्होंने सुभद्रा के महल से लेकर उसके ससुर के महल तक एक गुप्त सुरंग भी बनवा दी।

तैयारी हो जाने पर एक दिन सुभद्रा कवच धारण कर हाथ में तलवार लेकर घोड़े पर सवार हुई और वेश बदलकर सुरंग के मार्ग से अपने ससुर राजा समरसिंह के महल में जा पहुँची। राजा के सम्मुख सिर झुकाकर उसने उनसे नौकरी माँगी। राजा ने जब उसका परिचय पूछा तो उसने अपनी जाति राजपूत और अपना नाम रत्नसिंह बताया।

राजा ने उसे रात्रि के समय अपने महल के द्वार पर पहरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देने के लिए नियुक्त कर दिया। अब सुभद्रा दिन में महल में रहती और रात को रत्नसिंह के भेष में पहरा देती। अमरसिंह को उसके इस कार्य का बिल्कुल भी ज्ञान न था। अमरसिंह तलवार चलाने में बहुत कुशल था। उसने भी रत्नसिंह के शौर्य के बारे में सुना। वह रत्नसिंह के तलवार चलाने के कौशल को देखकर मुग्ध हो गया। धीरे-धीरे दोनों घनिष्ठ मित्र बन गए।

उन्हीं दिनों एक सिंह ने ब्रह्मपुर के निकट उत्पात मचा रखा था। उसने नगर के कई लोगों के पशुओं को पकड़कर खा लिया। चारों ओर उसका आतंक छा गया। लोग उसके भय से दिन में भी अपने द्वार बन्द रखते थे।

सिंह को मारने के लिए अनेक सशस्त्र सैनिक भेजे गए पर सफलता न मिली। अब रत्नसिंह को अपने शौर्य-प्रदर्शन का अच्छा अवसर मिला। राजा समरसिंह से उसने प्रार्थना की, "महाराज, कृपा करके उस दुष्ट सिंह का अन्त करने की आज्ञा दीजिए।"

"किन्तु मेरे सशस्त्र सैनिक असफल हो गए। तुम अकेले ही कैसे उस भयंकर सिंह को मार सकोगे?"

"महाराज के चरणों के प्रताप से सब कुछ सम्भव है, आप मुझे एक अवसर तो दीजिए।"

रत्नसिंह के उत्तर से प्रसन्न होकर राजा सहमत हो गया। रत्नसिंह ने राजा से कहकर लोहे की एक ऐसी खोखली प्रतिमा बनवाई जिसके अन्दर एक आदमी बैठ सके। वन में जिस स्थान पर सिंह शिकार के लिए प्रायः आया करता था उसी स्थान पर वह प्रतिमा रख दी गई। रत्नसिंह उसके अन्दर बैठ गया। वह कवच और तलवार धारण किए हुए था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजा और राजकुमार भी यह सब देखने के लिए कुछ दूरी पर अपने सैनिकों के साथ छिपकर बैठ गए।

रात अँधेरी थी। कुछ ही समय बीता था कि सिंह अपने शिकार की खोज में उसी स्थान पर आ पहुँचा जहाँ प्रतिमा के अन्दर रत्नसिंह उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। सिंह ने चमकती हुई प्रतिमा को देखा और उसे अपना शिकार समझकर उस पर झपटा। इधर रत्नसिंह तो पहले से ही सावधान था। स्वयं को सिंह की पकड़ से बचाते हुए रत्नसिंह ने फुर्ती से सिंह की गर्दन पर तलवार का वार किया। सिंह दहाड़ मारकर वहीं गिर गया। रत्नसिंह ने दूसरे वार में सिंह का काम तमाम कर दिया। अब राजा और राजकुमार भी अपने सिपाहियों के साथ बाहर आ गये। सबने रत्नसिंह के शौर्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

किन्तु सुभद्रा इतने से सन्तुष्ट न हुई। वह अपने शौर्य को प्रकट करने का एक अवसर और चाहती थी। शीघ्र ही उसे दूसरा अवसर भी मिला। एक बार राजा समरसिंह आखेट हेतु राज्य से बाहर गए हुए थे। उन्हें कई दिन बीत गए थे। उनकी अनुपस्थिति का लाभ उठाकर पड़ोसी राजा ने आक्रमण कर दिया। राजकुमार अमरसिंह उन दिनों बीमार थे तथा आक्रमणकारी द्वारा बन्दी बना लिए गए। राजधानी पर भी शत्रु का अधिकार हो गया। सुभद्रा ने अविलम्ब अपने पिता से सहायता माँगी। उन्होंने सैनिकों की तीन टुकड़ियों भेजीं। दो टुकड़ियों को रत्नसिंह वेशधारी सुभद्रा ने राजधानी को घेर लेने का आदेश दिया और एक टुकड़ी का नेतृत्व करते हुए गुप्त सुरंग के मार्ग से महल में प्रवेश किया। शत्रु पर अचानक ही आक्रमण करके उसने अधिकार कर लिया। शत्रु बुरी तरह हार गया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भागने के अतिरिक्त उसके सामने कोई चारा ही न था। रत्नसिंह ने सर्वप्रथम राजकुमार अमरसिंह को मुक्त कराया।

राजा समरसिंह ने शिकार से लौटकर सारा वृत्तान्त सुना। वह रत्नसिंह की वीरता से बड़े प्रसन्न हुए। रत्नसिंह अनेक उपाधियों एवं उपहारों से सम्मानित किए गए।

राजकुमार अमरसिंह ने रत्नसिंह के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। दोनों की घनिष्ठता और भी बढ़ गई। एक दिन अवसर पाकर रत्नसिंह ने अपना वास्तविक रूप प्रकट कर दिया। सुभद्रा को रत्नसिंह के वेश में देखकर अमरसिंह चकित रह गया। उसने सुभद्रा की सराहना की और उसके बाद उसने राजकुमारी सुभद्रा को अपने हृदय सिंहासन की स्वामिनी बना दिया। □

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

2

दया की देवी

(1)

नासिक में 'देवी माई' नामक एक अस्पताल है। इस नाम के पीछे एक इतिहास है। देवी के पति की मृत्यु हो गई। बेचारी जवानी में ही विधवा हो गई। उसकी ससुराल में एक ननदोई थे। वे भी चल बसे और ननद बहुत बीमार हो गई। लोग कहने लगे, "यह देवी ही सबको खाये जा रही है।"

ऐसी स्थिति में देवी को अपना जीवन भार-रूप प्रतीत होने लगा ! कई बार जीवन का अन्त कर डालने की बात उसके मन में आती; क्योंकि कोई भी क्षण भर के लिए उसके साथ सहानुभूति प्रकट नहीं करता था। परन्तु वह सोचती, 'आत्म-हत्या महापाप है' इसलिए वह अपने, जीवन का अन्त करने से रुक जाती।

देवी का एक भाई था। वह उसका ध्यान रखता था। उसने देवी को नर्सिंग ट्रेनिंग स्कूल में प्रविष्ट करा दिया। देवी नर्स बनकर निकली और एक छोटे-से चिकित्सालय में उसे नौकरी मिल गई। यह एक निजी (प्राइवेट) चिकित्सालय था और इसकी मुख्य संचालिका एक अंग्रेज महिला डाक्टर जॉन मेरी थी।

एक बार एक हरिजन बहन चिकित्सालय में भर्ती होने आई। रात को उसके पेट में दर्द हुआ। परन्तु अस्पताल में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिस्तर केवल अंग्रेज और यूरोपियन महिलाओं के लिए ही दिया जाता था। देवी ने इस नियम को भंग करके बिस्तर उस हरिजन बहन को दे दिया।

इस बात का पता लगाने पर जॉन मेरी का पारा चढ़ गया। उसने देवी को डाँटा-डपटा। पर देवी ने सहज स्वर में इतना ही कहा, "ऊँच-नीच का भेद तो हम लोगों ने बना लिया है। धर्म की दृष्टि से तो सभी मनुष्य एक कुटुम्ब के सदस्य हैं।"

(2)

जॉन मेरी ने देवी को अस्पताल से निकाल दिया। अस्पताल छोड़ने के बाद देवी ने वेतन में से लगातार बचाए हुए धन से तथा भाई की मदद से पाँच-छः बिस्तर वाले एक कमरे का अस्पताल शुरू किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब देवी रोगियों की सेवा रात-दिन करने लगी। अठारह-अठारह, बीस-बीस घण्टे लगातार वह मातृ-हृदय की सजीव मूर्ति रोगियों का दुःख बाँटती थी और निःस्वार्थ भाव से देखभाल करती थी।

अन्त में उसके जीवन-कार्य की सुगन्धि चारों ओर फैलने लगी। समाचार पत्रों में विज्ञापन तथा फोटो छपवाने की उसे आवश्यकता नहीं हुई। उत्कृष्ट सेवा-भावना के कारण अब वह केवल देवी न रहकर लोगों में 'देवी माई' के नाम से प्रसिद्ध हो गई थी।

(3)

देवी माई के एक कमरे वाले छोटे-से अस्पताल को चारों ओर से सहायता मिलने लगी। धीरे-धीरे वह एक भव्य और विशाल अस्पताल बन गया। इस अस्पताल की इतनी ख्याति हुई कि एक दिन जॉन मेरी, जिसके यहाँ एक समय देवी काम करती थी, उस अस्पताल को देखने आई।

बाहर मिलने वालों की लम्बी पंक्ति लगी हुई थी। जिस में जॉन मेरी भी खड़ी थीं। इस नये अस्पताल का कार्य देखकर उसे बहुत प्रसन्नता हो रही थी। इसलिए वह इस अस्पताल की संचालिका को धन्यवाद देना चाहती थी। उसे पता नहीं था कि एक समय जिस बहन को अपमानित करके उसने अपने अस्पताल से निकाल दिया था, वही इस अस्पताल की मुख्य संचालिका 'देवी माई' है।

थोड़ी देर में देवी माई बाहर से आई और ज्योंही उसने अन्दर जाने को कदम उठाया कि उसकी दृष्टि जॉन मेरी पर पड़ी। देवी माई को स्मरण हो आया, इसी बहन के पास मैंने पहले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नर्स का काम किया था। देवी माई जॉन को अन्दर केबिन में ले गई। जॉन झिझकती हुई बोली—

"देवी ! तू धन्य है। तुम्हारे काम को आज मैंने अस्पताल के हर एक हिस्से में घूम-घूमकर देखा है। तुमने महान् सफलता प्राप्त की है। मानव जाति के दुःखों को दूर करने की तुम्हारी लग्न देखकर मेरा मस्तक झुक गया। क्या तुम मुझे अपनी भूल का प्रायश्चित करने का अवसर दोगी ?"

जॉन मेरी ने पर्स में से डायरी निकालकर कुछ लिखकर दिया और कहा, "इसको स्वीकार करके मेरी भूल को सुधारने का मुझे अवसर दो, यही मेरी प्रार्थना है।"

देवी माई ने कागज़ खोलकर देखा। उसमें जॉन मेरी ने देवी माई के दिव्य जीवन-कार्य के प्रति एक नम्र उपहार के रूप में अपनी सारी सम्पत्ति देवी माई के अस्पताल को भेंट कर दी। □

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

3

तालाब की मछलियाँ

वह रात्रि सुन्दर होती है जिसमें आकाश में चन्द्रमा और तारे खिले हों। वह उपवन सुन्दर और दर्शनीय होता है जिसमें चारों ओर वृक्षों पर मुस्कराते हुए रंग-बिरंगे फूल लगे हों। उसी प्रकार वह तालाब भी सुन्दर प्रतीत होता है जिसमें पर्याप्त जल हो, ढेर से कमल खिले हों और प्यारी-प्यारी मछलियाँ जल में किलोलें करती हों।

एक गाँव के सिरे पर एक ऐसा ही सुन्दर तालाब था।

उसमें बहुत-सी छोटी-छोटी मछलियाँ इधर-उधर उछलती हुई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रीड़ा करती रहती थीं। इन मछलियों के तीन नेता थे। उनमें से एक का नाम अनागत विधाता, दूसरी का नाम यद्भविष्य और और तीसरी का नाम प्रत्युत्पन्नमति था।

एक सुहानी शाम को जबकि सभी मछलियाँ तालाब के निर्मल जल में हँस-खेल रही थीं, कुछ मछेरे उस ओर से गुजरे। इस तालाब में मछलियों की अधिकता देखकर वे बड़े प्रसन्न हुए और उनमें से एक ने कहा, "यह तालाब हम लोगों ने आज पहली बार देखा हैं, इसमें तो बहुत-सी मछलियाँ हैं। कल हम आजीविका के लिए मछलियाँ पकड़ने यहीं आयेंगे।" अन्य मछेरों ने भी इस बात पर अपनी सहमति प्रकट की और खुशी-खुशी वहाँ से चले गए।

मछेरों की बातें सुनकर तालाब का वातावरण एकदम गम्भीर हो गया। मछलियों का खेल-कूद बन्द हो गया। सभी भयभीत हो गईं। जीवन-रक्षा की कठिन समस्या सामने थी। इस समस्या पर विचार करने के लिए तत्काल ही एक मत्स्य-सम्मेलन आयोजित किया गया। उसमें तीनों नेताओं ने जाति रक्षा के प्रमुख प्रश्न पुर अपने-अपने विचार प्रकट किए। इस गंभीर समस्या पर सर्वप्रथम अनागत विधाता ने अपना मत व्यक्त किया, "मैं तो यह समझती हूँ कि विपत्ति के आने से पूर्व ही उसका निराकरण कर लेना उचित होता है। अतः मेरी राय तो यह है कि हमें इसी समय इस तालाब को छोड़कर किसी अन्य स्थान पर चले जाना चाहिए। यही हमारी रक्षा का सर्वोत्तम उपाय होगा।" इसके बाद यद्भविष्य मंच पर पधारी। यह भाग्य पर भरोसा करने वाली थी। इसने अनागत विधाता से असहमति व्यक्त की और बड़े जोरदार शब्दों में कहा, "संसार में भाग्य ही सबसे अधिक प्रबल शक्ति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। सब कुछ इसी के अधीन है। होनी को कोई टाल नहीं सकता। जो कुछ होना है वह तो होकर ही रहेगा, इसलिए कहीं भी चले जाने से प्राण-रक्षा नहीं हो सकती। अतः अपने पुरखों के निवास-स्थान को छोड़कर इस प्रकार चले जाना हमारे लिए उचित नहीं।" अन्त में प्रत्युत्पन्नमति ने भी अपना ओजस्वी भाषण देते हुए कहा, "आने वाली परिस्थितियों का सामना स्थान और समय को दृष्टि में रखकर साहसपूर्वक करना उचित होता है। हमें हिम्मत से काम लेना चाहिए। केवल मछेरों की बात सुनकर अपनी प्यारी जन्मभूमि को त्यागकर इस प्रकार चले जाना कायरता है। इसलिए मैं तो यहीं रहूँगी और जो भी स्थिति सामने आएगी उसका वैसे ही सामना करूँगी।"

सभा समाप्त हुई। सभी मछलियाँ एक मत से किसी निर्णय पर न पहुंच सकीं। कुछ देर बाद अनागत विधाता और उसकी अनुयायी मछलियाँ तालाब छोड़कर चली गईं। शेष आने वाली स्थिति का सामना करने के लिए वहीं रह गईं।

अगले दिन जब भगवान भुवन भास्कर ने अपनी किरणों का जाल सृष्टि पर बिछा दिया तो मछुओं ने भी तालाब में अपना जाल बिछा दिया। उस जाल में अन्य मछलियों के साथ यद्भविष्य भी फँस गई। उसने यह सोचकर सन्तोष कर लिया कि जाल में फँस जाना ही उसके भाग्य में लिखा है। नियति से कोई नहीं बच सकता। अतः जो कुछ भी होना होगा, वह तो होकर ही रहेगा। मछुओं ने उसे पकड़ लिया और मार डाला।

अब रही प्रत्युत्पन्नमति। ज़ब मछेरों ने जाल बिछाया तो प्रत्युत्पन्नमति ने समझ लिया कि परीक्षा की घड़ी निकट ही है। उसने फौरन ही समस्या का समाधान भी खोज निकाला और उछलकर गहरे जल में प्रविष्ट हो गई। इस प्रकार वह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

युक्तिपूर्वक अपनी प्राण-रक्षा करने में समर्थ हुई।

वास्तव में यह संसार एक तालाब ही तो है। इसमें रहने वाले नर-नारी तीन प्रकार के होते हैं। पहली श्रेणी के मनुष्य अनागत विधाता के समान होते हैं जो अनागत का विधान करने वाले होते हैं अर्थात् वे विपत्ति के आने से पूर्व ही उसका निदान कर लेते हैं। ऐसे व्यक्ति सदा सुखी रहते हैं। दूसरी कोटि में वह मनुष्य हैं जो यद्‌भविष्य की भाँति भाग्य पर भरोसा करते हैं। वे निरन्तर दुःख भोगते हैं। तीसरी श्रेणी के व्यक्ति प्रयुत्पन्नमति जैसे होते हैं जो संकट का परिस्थिति के अनुकूल अविलम्ब सामना करने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे बुद्धिमान व्यक्ति ही जीवन-निर्वाह करने में सफल होते हैं।

बच्चो, इसी प्रकार विद्यालय को भी एक जलाशय के रूप में देखा जा सकता है। इसमें कुछ विद्यार्थी अनागत विधाता की तरह होते हैं जो परीक्षा रूपी जाल में फँसने से पहले ही अपनी पूरी तैयारी कर लेते हैं। वे सदा सफलता प्राप्त करते हैं। उनके जीवन रूपी उद्यान में खुशियों के फूल अपनी महक भर देते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ विद्यार्थी यद्‌भविष्य की भाँति परीक्षा के जाल में फँसकर निरन्तर दुःखों का सामना करते हैं, क्योंकि वे समयानुसार अपनी तैयारी नहीं करते तथा आमोद-प्रमोद में समय को व्यर्थ नष्ट कर देते हैं। समय रहते सचेत नहीं होते और परीक्षा रूपी जाल में उलझ कर रह जाते हैं। उनको सदा दुःखद परिणाम भोगने पड़ते हैं। कुछ विद्यार्थी प्रत्युत्पन्नमति जैसे भी होते हैं जो समय रहते चेत जाते हैं तथा दुःखद परिणाम से अपनी रक्षा करने में सफल होते हैं। □

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

4

राजपूत का वचन

अमरकोट राज्य की राजधानी सोड़ा थी। यहाँ के राजा के पास अनारसिंह नामक एक प्रसिद्ध वीर सामन्त था। अनारसिंह के पास बहुत बड़ी सेना और एक जागीर थी। एक बार अमरकोट के राजकोष को कहीं से सिपाही अपनी रक्षा में ला रहे थे। अनारसिंह ने सेना लेकर उस पर धावा बोल दिया। परन्तु राजा के सिपाही भी बहुत वीर थे। खूब युद्ध हुआ। अन्त में अनारसिंह हार गया। राजा को जब पता लगा, तो उसने जागीर छीनकर अनारसिंह को देश निकाला दे दिया।

अनारसिंह जब अपनी जागीर से निकाल दिया गया, तो वह एक गाँव में जाकर बस गया। अपमान और दरिद्रता के कारण उसने कुछ दिन के बाद ही प्राण त्याग दिये। अनारसिंह की विधवा अपने एकमात्र पुत्र अजीतसिंह को बहुत यत्न से पालने लगी। पिता की मृत्यु के समय अजीतसिंह तेरह वर्ष का था। उसकी माता ने मेहनत-मजदूरी करके पाल-पोस कर उसे बड़ा किया। अजीतसिंह के पूर्ण युवा होने से पहले ही उसकी माता का भी देहान्त हो गया।

अजीत इस संसार में बिना घर, बिना धन और माता-पिता के अकेला रह गया।

वंशलपुर के एक जागीदार ठाकुर प्रतापसिंह थे। इनकी एक पुत्री का नाम राजबाला था, जो बचपन से ही बड़ी धैर्य-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शालिनी, बुद्धिमती तथा चतुर थी। पिता ने इसकी शिक्षा-दीक्षा का भी यथोचित प्रबन्ध किया था। ठाकुर प्रतापसिंह की ठाकुर अनारसिंह से बड़ी मित्रता थी। अनारसिंह के पुत्र अजीतसिंह के साथ राजबाला की सगाई की बात बचपन से ही पक्की हो चुकी थी। राजपूत बात के बड़े धनी होते थे। सन्तान भी अपने माता-पिता का सम्मान करती थी।

अजीतसिंह जब युवा हुआ तो उसने एक चतुर दासी द्वारा राजबाला का मन जानना चाहा कि क्या वह उससे विवाह करना स्वीकार करेगी। राजबाला ने कहला भेजा, "मुझे तो अजीतसिंह से विवाह करना है, फिर चाहे वह निर्धन ही क्यों न हो। परन्तु इस विषय में मैं परवश हूँ। अजीतसिंह को चाहिए कि मेरे पिता से कहें, वे अवश्य मान लेंगे। मैं यदि विवाह करूँगी तो अजीतसिंह के साथ, अन्यथा प्राण त्याग दूँगी।"

अजीतसिंह राजबाला की इच्छा जानकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने राजबाला के पिता प्रतापसिंह के पास सन्देश भेजा, "मैं राजबाला से विवाह करना चाहता हूँ। क्या आप अपनी पुत्री का विवाह मेरे साथ करने को तैयार हैं?"

इसके उत्तर में ठाकुर प्रतापसिंह ने कहला भेजा, "अजीतसिंह हम अपनी पुत्री राजबाला का विवाह तो तुमसे करने को तैयार हैं; परन्तु तुम्हारे पास राजकुमारी के भरण-पोषण के लिए भी तो कुछ होना चाहिए। यदि तुम बीस सहस्र रुपया इकट्ठा करके लाओ तभी हम राजबाला का विवाह तुमसे कर देंगे।"

अजीतसिंह को विवाह की तो आशा हुई; परन्तु रुपयों की बात से बड़ी चिन्ता हुई। उसके पास तो धन था नहीं; उसे किसी सम्बन्धी या मित्र से भी मिलने की आशा नहीं थी। बहुत सोच-विचार कर अन्त में उसे अपने पिताजी के एक मित्र साहू-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कार को याद आई। वह तुरन्त उस साहूकार से मिलने के लिए जैसलमेर गया। वहाँ जाकर उससे सारी कथा कही। साहूकार ने सारी बात समझ कर आश्वासन दिया और एक शर्त पर रुपया देना स्वीकार किया। उसने कहा, "बीस हज़ार मैं देता हूँ। तुम विवाह कर लो; पर जब तक तुम मेरा रुपया ब्याज-सहित न लौटा दोगे, वचन दो कि तब तक तुम चैन से न बैठोगे।"

अजीतसिंह ने पहले तो कुछ सोचा, फिर दृढ़तापूर्वक प्रतिज्ञा कर ली और बीस हज़ार रुपया ले लिया। ठाकुर प्रताप-सिंह ने रुपया देखकर कहा, "अजीतसिंह, अब राजबाला के साथ विवाह की तैयारी करो।"

राजबाला का विवाह अजीतसिंह के साथ बड़ी धूमधाम से हो गया। विवाह के अनन्तर दोनों आनन्द से रहने लगे। धूम-धाम में लगभग सब धन खर्च हो गया। अतः अजीतसिंह को नींद कहाँ? वे रात को तलवार सामने रखकर जागते रहते थे। कुछ दिन राजबाला यह कौतुक देखती रही। अन्त में उसने साहस करके एक दिन पति से तलवार सामने रखकर जागने का कारण पूछा।

पहले तो अजीतसिंह ने बतलाने में टालमटोल की; पर अन्त में राजबाला को साहूकार से हुई प्रतिज्ञा सुना दी। राजबाला बहुत बुद्धिमती थी। उसने धैर्य से सारी बात सुनकर कहा, "ऐसी अवस्था में हमें यहाँ से निकल चलना चाहिए, और कहीं जाकर नौकरी करनी चाहिए। मैं भी पुरुष-वेश धारण करके आपके साथ चलूंगी। हम कहीं नौकरी करके यह ऋण चुका देंगे।"

राजबाला ने राजपूत युवक का वेश धारण किया और पति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के साथ जाने के लिए तैयार हो गईं। वे दोनों उसी रात घोड़े पर सवार हो घर से चल पड़े और उदयपुर पहुँचे। अधि-

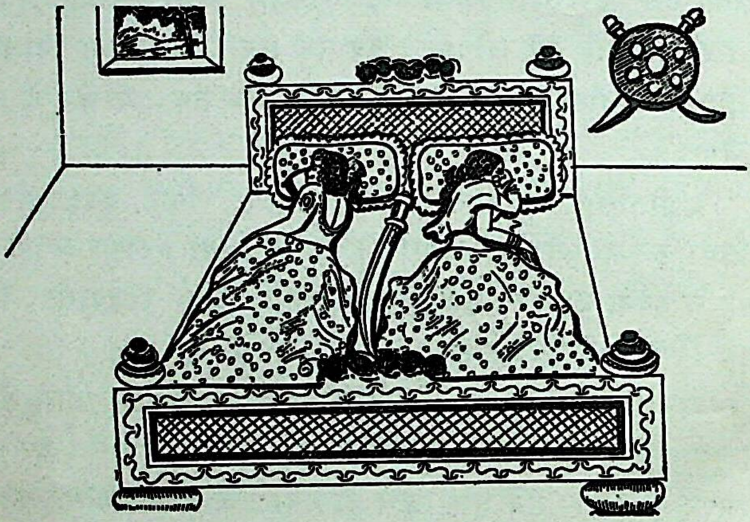

कारियों से मिलकर महाराणा के सामने उपस्थित हुए।

महाराणा—तुम्हारा नाम क्या है ?

अजीतसिंह—मेरा नाम अजीतसिंह है और यह मेरा मित्र है—इसका नाम राजसिंह है, महाराज! हम जीविका की खोज में आए हैं।

महाराणा—अच्छा, तुम दोनों मेरे यहाँ रहो! रहने के लिए मकान और खानपान के अतिरिक्त पाँच सौ रुपए मासिक मिलेंगे।

दोनों ने सिर झुकाकर महाराज को प्रणाम किया। नौकरी लग गई, पर पाँच सौ रुपये मासिक की नौकरी में खर्च करके बीस हजार रुपये बचाना आसान न था। सब काम करते हुए भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दोनों चिन्तित रहने लगे।

वर्षा काल बीत चुका था और दशहरे का त्यौहार धूमधाम से मनाने की तैयारियाँ हो रही थीं। उदयपुर में क्षत्रिय लोग वीरता की परीक्षा के लिए एक जंगली भैंसे को पकड़कर उससे युद्ध करते और उसका वध करते थे। इस बार जंगली भैंसे के स्थान पर एक सिंह भी पकड़ा गया था। सिंह से स्वयं ही मुकाबला करने का निश्चय महाराणा ने किया था। कई दिन सिंह को भूखा रखा गया। वह बार-बार क्रोध से गरज रहा था, जिससे दिशाएँ भी काँप उठती थीं।

ठीक समय पर महाराणा हाथी पर सवार होकर चले। उनके पीछे-पीछे अनेक राजपूत सरदार थे। अजीतसिंह और राजसिंह भी घोड़ों पर सवार होकर महाराणा के पीछे-पीछे चल रहे थे।

जब एक बड़े भारी बाड़े के अन्दर महाराणा का हाथी और सब सवार पहुँच गए, तो पिंजरे में से भूखे शेर को बाड़े में छोड़ा गया। महाराणा की इच्छा थी कि शेर को स्वयं मारें। सिंह को मारना वीरता का सबसे बड़ा लक्षण था।

महाराणा अभी सोच ही रहे थे कि सब ओर से घिरा हुआ भूखा सिंह आगे बढ़ा। उसने उछलकर महाराणा के हाथी पर आक्रमण किया। वह हाथी के मांस का लोथड़ा नोंचकर पीछे हट गया। यह देखकर मारे भय के महाराणा के हाथ से धनुष-बाण भी छूट गया। हाथी चिंघाड़कर भागने को तैयार हो गया। सरदार लोग अपनी-अपनी जान बचाकर इधर-उधर भागने लगे। सिंह क्रोध से उत्तेजित हो गया। उसने दूसरी बार झपट्टा मारने की तैयारी की। महाराणा घबराए हुए थे।

अजीतसिंह और राजसिंह यद्यपि बहुत दूर खड़े थे तथापि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजसिंह ने यह सब बात देखकर अजीत से कहा, "ठाकुर साहब! सिंह दूसरी बार महाराणा पर झपट रहा है। इस बार महाराणा के प्राण संकट में हैं। अब उनके प्राणों की रक्षा का समय है। मैं चला।" यह कहकर राजसिंह ने घोड़े को एड़ लगाई। सिंह उछलने को ही था कि राजसिंह ने भाले का एक भरपूर प्रहार किया। सिंह धरती पर जा पड़ा। साथ ही राजसिंह ने तलवार का वार करके सिंह का अन्त कर दिया। उसके कान और पूँछ काटकर वह तुरन्त वहाँ से भागकर अजीतसिंह के पास जा पहुँचा। यह काम राजसिंह ने इतनी फुर्ती से किया कि कोई भी यह बात न जान सका कि सिंह को किसने मारा है। अजीतसिंह भी उसकी फुर्ती देखकर चकित हो गया।

महाराणा ने सिंह को मरा हुआ जानकर मारने वाले को खोजना आरम्भ किया। सभी सवार झूठ-मूठ अपना नाम बताने लगे। महाराणा ने कहा, "मारने वाले ने इतनी शीघ्रता से यह काम किया है कि मैं उसे ठीक-ठीक नहीं पहचान सका। मैंने उसे सिंह की ओर जाते हुए अच्छी तरह देखा, सामने आने पर मैं उसे पहचान लूंगा।"

यह कहकर महाराणा ने एक-एक सवार को अपने सामने से गुजरने की आज्ञा दी। ज्यों ही राजसिंह सामने आए, तो महाराणा ने देखकर कहा। "वीर! मैं उस समय यद्यपि पूरा-पूरा नहीं पहचान पाया, तो भी तुम्हें देखकर समझता हूँ कि आज तुम्हीं ने मेरे प्राण बचाए हैं।"

तभी अजीतसिंह ने आगे आकर कहा, "महाराणा जी, सिंह के कान-पूंछ नहीं हैं। मारने वाले ने कान और पूंछ काटकर प्रमाण के लिए रख लिए प्रतीत होते हैं।"

राजसिंह ने तुरन्त घोड़े की काठी के नीचे से पूंछ और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कान निकालकर महाराणा की सेवा में प्रस्तुत कर दिए।

महाराणा ने प्रसन्न होकर राजसिंह की वीरता की बहुत प्रशंसा की और उसे तथा अजीतसिंह को अपना अंगरक्षक बना लिया। उनकी वीरता से प्रसन्न होकर उन्हें पुरस्कार भी दिया।

उस दिन से राजसिंह और अजीतसिंह की प्रतिष्ठा बढ़ गई। उन्हें वेतन भी बहुत अधिक मिलने लगा।

अजीतसिंह और राजसिंह दोनों दिन में इकट्ठे रहते थे, पर रात को अलग-अलग हो जाते थे। रात को अजीत महाराणा के दरबार का पहरा देता था और राजसिंह महलों में पहरा देता था।

× × ×

अजीत और राजबाला के विवाह को पूरा एक वर्ष बीत चुका था। नई-नई वर्षा ऋतु फिर से आई। आकाश में बादल छा रहे थे। सन-सन करके शीतल पवन चल रही थी। बिजली चमक रही थी। उस समय महाराणा अजीत के संग थे। वे रनिवास की ओर जाते हुए बोले, "अजीत ! तू जाकर आराम कर। मैं रनिवास में जाता हूँ।

रनिवास के फाटक पर ही राजसिंह बैठा था ! महाराणा के जाने पर राजसिंह ने वर्षा ऋतु की मल्हार रागिनी में एक गीत गाया। राग सुनकर रानी ने चकित होकर पूछा, "महाराज, ये दोनों राजपूत—अजीतसिंह और राजसिंह—आपके अंगरक्षक हैं, मुझे तो पति-पत्नी प्रतीत होते हैं। राजसिंह जो हमारे पहरे पर है, स्त्री प्रतीत होती है। किसी प्रकार से इनका रहस्य जानकर यदि इनका कोई कष्ट हो तो दूर करना चाहिए।

महाराणा (हँसकर) रानी ! तुम क्या कहती हो ! ये दोनों तो मित्र हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रानो—महाराज ! संभव है आपकी बात सत्य हो, पर मैं भी कुछ सोचकर ही कह रही हूँ। खोज करने में तो कोई दोष नहीं ?

महाराणा ने अजीतसिंह और राजसिंह—दोनों को महल में बुला भेजा। दोनों घबराए हुए आए और महाराणा को प्रणाम करके खड़े हो गए।

महाराणा—सच-सच बताओ, क्या तुम दोनों पुरुष हो ?

अजीत और राजसिंह चुप रह गए।

महाराणा—सच-सच कहो। डरो नहीं। तुमसे मैं बहुत प्रसन्न हूँ। निःशंक होकर मुझे अपना भेद सुनाओ।

अजीतसिंह—महाराज ! राजा सबका पिता होता है। अतः आप ही हमारे पिता हैं। आपसे क्या छिपा रह सकता है।

इतना कहकर अजीत ने सारा हाल सुना दिया। राणा ने उसी समय राजसिंह को दासी के साथ रानी के कमरे में भेज दिया और कहा कि उसे स्त्रियों के वस्त्र पहनाकर खूब आदर-मान से रखो। राजबाला लाज से संकुचित होकर दासी के साथ चली गई। तब महाराणा ने अजीतसिंह की प्रशंसा करते हुए कहा—

महाराणा—राजपूत वीर ! मैं तेरे बाप-दादा को जानता हूँ। ऐसा प्रण का धनी मैंने और कोई नहीं देखा। तेरी पत्नी भी वीर महिला है। धन्य है तुम्हें और तुम्हारे माता-पिता को।

प्रातःकाल महाराणा ने ब्याज सहित बीस हजार रुपया अजीतसिंह को देकर साहूकार के पास भेजा। साहूकार रुपये प्राप्त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करके बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अजीत को आशीर्वाद दिया।

अजीतसिंह ने वहाँ से आकर महाराणा के चरणों में सिर रख दिया और कहा, "अन्नदाता! आपकी दया से मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण हुई।"

महाराणा ने प्रसन्न होकर उन्हें बहुत-सी जागीर दी। वे राजबाला को अपनी पुत्री के समान स्नेह करते थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

5

हलवाड़ा की रक्षा

सन् 1965 की बात है। भारत और पाकिस्तान में भीषण युद्ध चल रहा था। सितम्बर से हवाई युद्ध भी आरम्भ हो गया था। भारत की वायु-सेना के सैनिक और अफसर बहादुरी से दुश्मन का सामना कर रहे थे। स्क्वाड्रन-लीडर ट्रेवर कोलर 3 सितम्बर को और स्क्वाड्रन-लीडर पठानिया 4 सितम्बर को अपने-अपने नेट विमान से दुश्मन के एक-एक सेबर-जेट विमान गिराकर यह सिद्ध कर चुके थे कि भारत में बने नेट विमान अमेरिका के सेबर-जेट विमानों से कहीं अच्छे हैं। वे यह भी साबित कर चुके थे कि भारतीय हवाबाज पाकिस्तानी हवाबाजों से कहीं अच्छे हैं।

हमारे वायु सैनिकों के जिम्मे चार काम थे—1. दुश्मन के हवाई अड्डों पर आक्रमण करना,2. दुश्मन को आगे बढ़ने से रोकना और अपनी स्थल सेना की सहायता करना, 3. बम बरसाने के लिए जाने वाले बम-वर्षक विमानों की रक्षा करना, तथा 4. भारतीय हवाई-अड्डों तथा दूसरे रक्षा-स्थलों की रक्षा करना।

6 सितम्बर, 1965 शाम के छः बजे भारतीय विमान स्थल-सेना को सहायता तथा सामान पहुँचाकर हलवाड़ा हवाई अड्डे पर लौट रहे थे। भारतीय बम-वर्षक विमान भी हवाई-अड्डे पर उतर रहे थे। फ्लाइंग अफसर रुस्तमजी गांधी तथा उनके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साथी अपने हंटर विमानों में बैठे चक्कर लगा रहे थे, क्योंकि लौटते हुए भारतीय विमानों की रक्षा का भार उन पर था।

(फ्लाइट-लेफ्टिनेंट डी० एन० राठौर और फ्लाइंग-अफसर विनोदकुमार नेब को हवाई-अड्डे की चौकसी का उत्तरदायित्व सौंपा गया था। ये दोनों भी अपने-अपने हंटर विमान में बैठे हलवाड़ा से लगभग पांच किलोमीटर दूर चक्कर काट रहे थे। इतने में राठौर ने हलवाड़ा के ऊपर लगभग दो हजार मीटर पर चमकती हुई कोई चीज देखी। राठौर रेडियो-टेलीफोन पर चिल्लाया, "नेब, हलवाड़ा पर हमला हो रहा है! लौटो।")2

नेब ने विमान का मुंह हलवाड़ा की तरफ घुमाया और दोनों विमान लौट पड़े। उन्होंने क्या देखा कि सेबर-जेट विमानों ने गांधी और उसके साथियों के विमान को घेर रखा है और दो पाकिस्तानी विमान हलवाड़ा हवाई-अड्डे पर बम बरसाने के लिए निशाना साध रहे हैं।

राठौर ने रेडियो-टेलीफोन पर कहा, "नेब, तुम बाएँ सेबर को देखो, मैं दाएँ वाले को देखता हूँ।"

नेब ने तुरन्त अपना नेट विमान बाईं तरफ मोड़ा और राठौर दाईं ओर चल पड़ा।

धाँय! धाँय!! धाँय!!! गांधी के विमान की तोप गरज उठी। गोला निशाने पर बैठा। पाकिस्तानी बम-वर्षक तेजी से नीचे गिरने लगा। शत्रु का एक विमान गांधी के विमान के पीछे जा पहुँचा। (उसके एक गोले से गांधी के हण्टर विमान का एक पंख टूट गया। इस कारण गांधी का विमान हवा में डगमगाने लगा। गांधी पैराशूट लेकर फौरन विमान से कूद पड़ा।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उधर राठौर और नेब दो सेबर-जेटों के पीछे इस तरह लगे हुए थे. जैसे बिल्ली चूहे का पीछा करती है। हवाई अड्डे से विमानभेदी तोपें गरज उठीं। दुश्मन का एक सेबर-जेट ऊपर भागने की कोशिश करता हुआ गोले का शिकार हो गया।

अब दुश्मन के दो ही विमान शेष बचे थे। उनमें से एक के पीछे नेब था और दूसरे के पीछे राठौर।

राठोर ने तेज़ी से दाएँ ओर वाले विमान का पीछा किया। अभी दोनों में 300 मीटर का फासला था। राठौर ने रेडियो-टेलीफोन पर कहा, "नेब, तुम बाएँ सेबर का पीछा करो।"

इतना कहकर राठौर ने लीवर खींचकर अपने विमान की रफ्तार बढ़ाई। जब दुश्मन का विमान 200 मीटर दूर रह गया, तो राठौर ने बटन दबाया। धाँय ! धाँय !! धाँय! !! राठौर के विमान से छूटे हुए गोले दुश्मन के सेबर को लगे। दुश्मन अब बमबारी करना भूल जान बचाकर भागा। राठौर ने रफ्तार बढ़ाई। फिर धाँय! धाँय !! धाँय !!! राठौर के विमान से छूटे गोले घातक सिद्ध हुए। दुश्मन के विमान का बायाँ पंख टूट गया और वह विमान कलबाजियाँ खाकर जलता हुआ हलवाड़ा हवाई-अड्डे से 9 किलोमीटर दूर जा गिरा।

नेब अपने हंटर विमान से दुश्मन के चौथे विमान का पीछा कर रहा था। कुछ देर बाद वह दुश्मन के विमान के ठीक पीछे जा पहुँचा। डेढ़ सौ मीटर की दूरी से नेब ने गोले दाग दिये। दुश्मन ने तेज़ी से सेबर-जेट को ऊँचा उठाया। वह नेब की पहुँच से बाहर होने की कोशिश में था। अब नेब का विमान दुश्मन से केवल सौ मीटर की दूरी पर था। तभी नेब ने गोले दाग

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिये। धाँय ! धाँय ! ! धाँय ! ! ! दुश्मन के विमान का बायाँ पंख टुकड़े-टुकड़े होकर गिर गया। उसके विमान में आग लग गई और वह जलता हुआ नीचे गिर पड़ा।

हलवाड़ा के रक्षक फ्लाइंग-अफसर नेब, फ्लाइट लेफ्टिनेंट राठौर और फ्लाइंग-अफसर गांधी—तीनों को राष्ट्रपति ने अपने कर-कमलों से वीरचक्र प्रदान किए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

6

सबसे बड़ा तप

(1)

महर्षि कश्यप के कुल में पिप्पल नामक एक धर्मात्मा मनुष्य हुए। उनका मन पवित्र था। इन्द्रियाँ उनके वश में थीं। दशारण्य में रहकर वे तपस्या करते थे। उनके आश्रम के चारों ओर उनके तप का प्रभाव फैल गया था जिससे आस-पास के जंगली पशुओं का आपसी वैर-विरोध नष्ट हो गया था। जन्मजात शत्रु भी आपस में मिलकर प्रेमपूर्वक रहने लगे।

महात्मा पिप्पल ने इतना तप किया— इतना तप किया कि उनका शरीर तेज का पुञ्ज हो गया। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर देवताओं ने उन्हें वरदान दिया, "सारा जगत् तुम्हारे वश में हो जाएगा।"

देवताओं का वरदान पाकर महात्मा पिप्पल विद्याधर हो गए। वे जिस-जिस व्यक्ति का मन से ध्यान करते, वही उनके वश में हो जाता था।

दूसरों को वश में करने की सिद्धि पाकर पिप्पल फूले न समाए। उन्हें बहुत गर्व हो गया। वे लोगों से कहने लगे, "इस संसार में सबसे बड़ा तपस्वी और सिद्ध मैं हूँ मुझसे बड़ा कौन है?"

एक दिन एक सारस पक्षी वहाँ आया। उसने मनुष्य की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बोली में पुकारा, "पिप्पल ! इधर तो आओ।" पिप्पल जब पास आए, तो सारस ने कहा, "ब्राह्मण वही है जो अभिमान न करे। तुम ब्राह्मण होकर यह अभिमान क्यों करते हो कि संसार में तुमसे बड़ा तपस्वी तथा सिद्ध कोई नहीं है ? यद्यपि तुमने चिरकाल तक घोर तप किया है—मन और इन्द्रियों को वश में करने के कारण तुम्हें सिद्धि भी मिली है; फिर भी तुम मूढ़ के मूढ़ ही रहे। तुम 'जगत्-सचाई-सार' नहीं जानते। कुरुक्षेत्र में कुण्डल के पुत्र सुकर्मा विद्वान् पुरुष हैं।) जगत्-सचाई-सार का उन्हें ज्ञान है। पिप्पल ? जगत् में सुकर्मा के समान महाज्ञानी दूसरा कोई नहीं। सुकर्मा ने कभी दान नहीं किया, ध्यानयज्ञ,

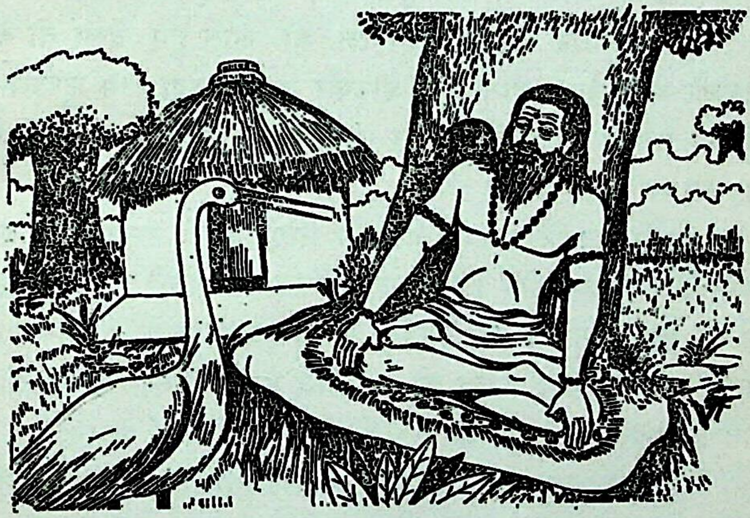

हवन-पूजा-पाठ भी नहीं किए, न कभी तीर्थ-यात्रा और गुरु की उपासना की है। फिर भी वे समस्त शास्त्रों के ज्ञाता हैं।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पिप्पल ने पूछा, "हे सारस ! फिर सुकर्मा की सिद्धि का कारण क्या है ?"

सारस ने उत्तर दिया, "पिप्पल ! सुकर्मा अपने माता-पिता की सेवा सच्चे मन से करते हैं। यही कारण है कि बालक होने पर भी उन्हें जैसा ज्ञान प्राप्त हुआ है, वैसा तुम्हें घोर तप करके भी नहीं प्राप्त हुआ।"

इतना कहकर सारस उड़ गया।

(2)

अब महात्मा पिप्पल जी कुरुक्षेत्र की ओर चल पड़े। सुकर्मा के दर्शन करने की उनके मन में तीव्र उत्कण्ठा थी। चलते-चलते वे कुण्डल के आश्रम में जा पहुँचे।

कुण्डलकुमार सुकर्मा ने पिप्पल को आते हुए देखा तो वे उठकर आगे बढ़े। दोनों हाथ जोड़कर उन्होंने कहा, "मैं कुण्डल-सुकर्मा आपका हृदय से स्वागत करता हूं। आइए, पधारिए। यह आसन है विराजिए।"

इतना कहकर सुकर्मा जल ले आए और उन्होंने जल से अतिथि के चरण धोए। फिर उन्होंने स्वागत करते हुए अतिथि से से कहा, "सारस के आग्रह से आप यहाँ पधारे हैं। तपस्या करके आपने सिद्धि प्राप्त की। सिद्धि प्राप्त करने से आपको गर्व हो गया। उसे दूर करने के लिए ही आप यहाँ पधारे हैं।"

इतना कहकर सुकर्मा आँख मूंदकर देवताओं का ध्यान करने लगे।

कुछ समय पश्चात् सुकर्मा ने जब आँखें खोली तो उनके मुखमण्डल से अपूर्व तेज बरस रहा था। पिप्पल को सुकर्मा का मुखमण्डल देखकर सारस के कथन की सचाई पर विश्वास हो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गया। उन्होंने प्रश्न किया—

"परमात्मा का अव्यक्त रूप क्या है ?"

सुकर्मा ने उत्तर दिया, "चराचर जगत् के स्वामी परमात्मा सर्व-व्यापक हैं—सर्वत्र विद्यमान हैं। उनके इस व्यापक अव्यक्त रूप को कोई नहीं देख सकता। वेद भी कहते हैं कि उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। उनके आँख, नाक, कान, मुख आदि नहीं हैं, किन्तु सब-प्राणियों के आँख, नाक, कान, मुख आदि को वही शक्ति देते हैं।"

इतना सुनते ही पिप्पल का सिर श्रद्धा से झुक गया। उन्होंने पूछा, "अच्छा अब भगवान के व्यक्त रूप का वर्णन कीजिए।"

सुकर्मा ने उत्तर दिया, "परमात्मा के व्यक्त रूप का एक अंश ब्रह्मा हैं, जो सम्पूर्ण प्राणियों का सृजन करते हैं। दूसरा अंश विष्णु हैं, जो जगत का पालन-पोषण तथा वर्द्धन करते हैं। तीसरा अंश शिवजी हैं, जो संहार करते हैं। ये ही त्रिदेव कहलाते हैं।"

महात्मा पिप्पल ने पूछा, "सुकर्मा जी, आपकी अवस्था कम है, अपने कोई तप, यज्ञ, योग, दान, तीर्थ भी नहीं किया। फिर क्या कारण है कि आपका ज्ञान अपार है तथा तेज अथाह है ?"

सुकर्मा ने उत्तर दिया, "महात्मा जी, मैंने याग-यज्ञ नहीं किया, योग, दान, तीर्थ आदि भी नहीं किया। और भी कोई पुण्य कर्म मैंने नहीं किया। माता-पिता की सेवा ही मेरे लिए सबसे बड़ा पुण्य-कर्म है। मैं अपने हाथों से ही माता-पिता के चरण धोता हूँ। उनकी सेवा करता हूँ। आलस्य त्यागकर दिन-रात मैं माता-पिता की सेवा में लीन रहता हूँ। जब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तक मेरे माता-पिता जीवित हैं, तब तक मेरे लिए उनकी सेवा ही अलभ्य लाभ है। मेरे लिए तप, दान, तीर्थयात्रा आदि पुण्य-कर्म गौण हैं—माता-पिता की सेवा ही सबसे मुख्य है। विद्वान पुरुष यज्ञ, दान, तप, तीर्थ आदि से जो फल पाते हैं, मुझे वह माता-पिता की सेवा से ही प्राप्त हो गया है। जहाँ माता-पिता रहते हैं, पुत्र के लिए वहीं गंगा, यमुना, गया, पुष्कर, काशी और हरिद्वार हैं। जो माता-पिता की सेवा करता है—मेरे विचार में वही सुपुत्र है। उस पर देवता, ऋषि-महर्षि तथा परमात्मा भी प्रसन्न होते हैं। जो पुत्र खान-पान तथा वस्त्र आदि से माता-पिता को सन्तुष्ट रखता है, उसे आप ही 'जगत्-सचाई-सार' प्राप्त हो जाता है। जो पतित, वृद्ध, रोगी, भूख से व्याकुल तथा कोढ़ी माता-पिता की सेवा करता है, उस पर परमात्मा स्वयं प्रसन्न होते हैं। यह साधना योगियों के लिए भी दुर्लभ हैं। जो माता-पिता का आदर-सम्मान नहीं करता, उसके यज्ञ, तप, दान, पूजा-पाठ और सभी शुभ कर्म निष्फल हो जाते हैं।"

महात्मा पिप्पल ने पूछा, "माता-पिता अंगहीन, दीन, महा-रोगी और मृत्यु का ग्रास बनने वाले हों, क्या तब भी उनकी सेवा करनी चाहिए ?"

सुकर्मा ने उत्तर दिया, "हाँ तब भी उनकी सेवा करनी चाहिए। जो अंगहीन, दीन, वृद्ध, दुःखी तथा महारोगी माता-पिता की सेवा नहीं करता, उन्हें त्याग देता है, वह नरक में पड़ता है। जो मूर्ख पुत्र माता-पिता के बुलाने पर नहीं जाता, जो घर में वृद्ध माता-पिता को भोजन कराये बिना पहले स्वयं भोजन करता है, जो माता-पिता को कटुवचन कहता है, जो माता-पिता को प्रणाम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहीं करता, ऐसे पुत्र के जीवन का कभी उद्धार नहीं होता।"

इतना सुनकर विप्पल जी ने कहा—"सुकर्मा, तुम धन्य हो तुम्हारा तप सभी प्रकार के तपों से श्रेष्ठ है। तुम परम तपस्वी हो। तुम्हारा नाम 'सुकर्मा' ठीक ही है। तुम्हारा तप देखकर मेरे मन से अपने तप का गर्व दूर हुआ। तुम ज्ञान में मुझसे बड़े हो। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

7

वे मौत से खेले

इंग्लैंड के प्रसिद्ध नाविक राबर्ट फाकन स्कॉट अपने देश की सरकार के आदेशानुसार 31 जुलाई, 1901 को दक्षिणी ध्रुव की खोज करने का बीड़ा उठाया।

दक्षिणी ध्रुव वह स्थान है जो साल भर हिम से ढका रहता है। यहाँ वर्षा कभी नहीं होती और ग्रीष्मकाल का तापमान 40° फारेनहाइट से कम और शीतकाल में तापमान शून्य से भी कम हो जाता है। यहाँ छः मास का दिन और छः मास की रात होती है।

कप्तान स्कॉट ने दक्षिणी ध्रुव की खोज के लिए जो विशेष प्रकार का जहाज तैयार करवाया था उसका नाम 'डिस्कवरी' रखा गया था। स्कॉट ने अपने देश के चुने हुए नौ चालकों का एक दल चुना और इस खोज के लिए प्रस्थान किया। उसने मार्ग-व्यय के लिए सारी आवश्यक सामग्री अपने जहाज में रख ली। उनके देशवासियों ने बड़े आदर-सम्मान के साथ उन्हें विदाई दी।

इंग्लैंड से चलकर उनका जहाज ज्यों-ज्यों दक्षिणी ध्रुव के पास पहुँचता गया, त्यों-त्यों उनकी कठिनाइयाँ बढ़ती गईं। अन्त में वे एक ऐसे समुद्र में जा पहुँचे, जो जमकर ठोस पत्थर-सा हो गया था।

कप्तान स्कॉट की इच्छा थी कि शीतकाल आरम्भ होने से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पहले ही 'रास एडियर' तक जा पहुँचें और वहीं शीत के दिन काट लें; परन्तु अब यह संभव नहीं था। अनेक प्रयत्न करने पर भी वे 'रास एडियर' तक न पहुँच सके। उनका जहाज तट से कोई 48 किलोमीटर दूरी तक ही जा सका। स्कॉट ने जहाज़ को वहीं छोड़ा और अपने दल के साथ सामान ले जाकर तट पर तम्बू लगाए और सर्दी से बचाव का प्रत्येक प्रबन्ध करने लगे।

एक दिन दूर से उन्हें अपने देश के झण्डे वाले जहाज आते दिखाई दिए। वे समझ गए कि दोनों जहाज उनकी मदद को भेजे गए हैं। वे बहुत प्रसन्न हुए। जब वे जहाज उनके पास पहुँचे, तो उन्होंने स्कॉट को एक पत्र दिया। उस पत्र में उन्हें आज्ञा दी गई थी कि अपना प्रयत्न छोड़कर स्वदेश लौट आएँ।

इसके छः वर्ष बाद स्कॉट ने दूसरी बार दक्षिणी ध्रुव की खोज की तैयारी आरम्भ कर दी। इससे कुछ ही समय पहले नार्वे देश के एक साहसी कप्तान ने जिसका नाम एमंडसन था, दक्षिणी ध्रुव को खोज के लिए प्रस्थान किया था। स्कॉट भी उसके साथ ही चल पड़ा। इस नई यात्रा के लिए एक नया जहाज़ तैयार किया गया था। इसका नाम 'टेरानोवा' था। स्कॉट विवाहित था और उसका एक पुत्र भी था; परन्तु जब वह दूसरी बार यात्रा पर रवाना हुआ तो उसकी पत्नी ने उसको बहुत उत्साहित किया। सारे देशवासियों की करतल ध्वनि के मध्य स्कॉट 'टेरानोवा' पर जा सवार हुआ। डॉक्टर विल्सन, कप्तान ओइट्स, लेफ्टिनेंट बोवर्ज और इवांज उसके साथी थे। ये परिपक्व तथा अच्छे अनुभवी अफ़सर थे। इनके अतिरिक्त और भी बहुत-से कर्मचारी उसके साथ थे। खाने-पीने आदि की पर्याप्त सामग्री भी जहाज में रख ली गई थी। जहाज ने लंगर उठाया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'टेरानोवा' कई सागरों को पार करता, बर्फ को चीरता, ओर हिमशिलाओं से बचता हुआ अन्त में दक्षिणी ध्रुव के तट पर जा पहुँचा। इस पर कप्तान स्कॉट ने अपने साथियों को बधाई दी।

थोड़ी-थोड़ी दूरी पर पड़ाव बनाए गए। इनमें खाने-पीने की चीजों के साथ इँधन भी रखा गया, जिससे कि लौटते समय कठिनाई न हो। साथ ले जाने वाले सामान के लिए स्लेज गाड़ियाँ तैयार की गईं। यह निर्णय हुआ कि वे भिन्न-भिन्न पड़ावों में ठहरें और कप्तान स्कॉट केवल चार साथियों को लेकर आगे जाएँ।

ज्यों-ज्यों स्कॉट और उसके तीन साथी आगे बढ़ते गए, मार्ग अधिक कठिन होता गया और जोखिम भी अधिक बढ़ता गया। कई बार स्कॉट और उनके साथी ऐसे स्थानों पर पहुँचे जहाँ बर्फ बहुत नरम थी और सबसे अधिक विनाश का भय था। परन्तु स्कॉट ने साहस न खोया और तीनों साथियों के साथ आगे ही आगे बढ़ता गया।

वे दिन में केवल 16 किलोमीटर चल पाते थे। अब वे दक्षिणी ध्रुव से केवल 25 किलोमीटर दूर रह गए थे और केवल दो दिन की यात्रा शेष थी। स्कॉट और उसके साथी वीरता और साहस के साथ आगे बढ़े। परन्तु उनकी गति एकाएक रुक गई, क्योंकि लेफ्टिनेंट बोवर्ज को दूर से कोई चीज दिखाई दी। उसने अपने साथियों को उस ओर देखने को कहा। उसने कहा, "मुझे ऐसा मालूम होता है कि जैसे किसी ने ध्रुव पर झंडा गाड़ रखा है।"

यह दल आगे बढ़ता गया और ज्यों-ज्यों नजदीक पहुँचता गया, त्यों-त्यों यह झंडा साफ दिखाई देने लगा। जब यह दल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वहां पहुँचा, तो इन्होंने देखा कि यह झंड़ा नार्वे का है, जो उनके यहाँ पहुंचने के पहले ही कप्तान एमंडसन ने गाड़ दिया था।

एमंडसन अपने देश का झंडा गाड़कर वापस हुआ, परन्तु वह कहीं रास्ते में ही मर गया। कप्तान स्कॉट ने भी दक्षिणी ध्रुव पर अपने देश का झंडा गाड़ा और उस पर अपना तथा अपने साथियों का नाम लिखकर वह वापस लौटा।

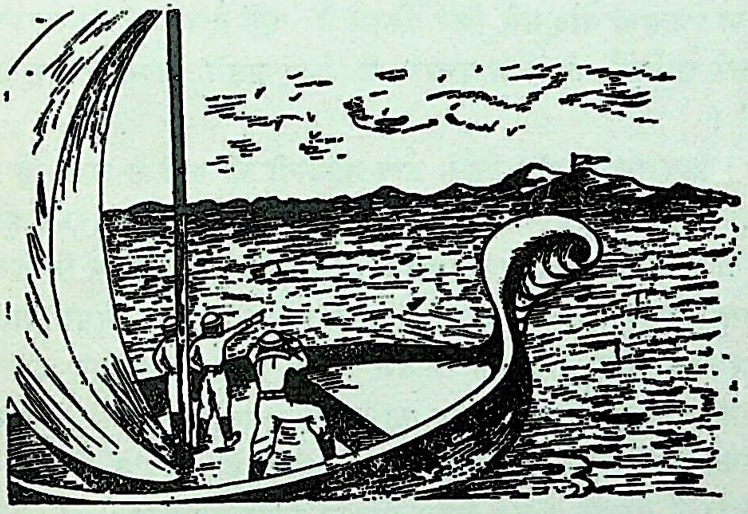

लौटते समय की यात्रा बहुत ही जोखिम की थी। सबसे पहले इवांज बीमार हो गया और थोड़े समय तक बीमार रहने के बाद मर गया। दूसरे दिन कप्तान ओइट्स बीमार पड़ा। वह इस योग्य न रहा कि आगे जा सके। इस पर उसने अपने साथियों से कहा, "ठीक यह होगा कि आप लोग मुझे यहीं छोड़कर चले जाएँ। मुझे तो अवश्य मरना है; पर कहीं ऐसा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न हो कि मेरे कारण आप सबको भी जीवन से हाथ धोना पड़े।"

यह सुनकर कप्तान स्कॉट ने कहा, "ऐसा कभी नहीं हो सकता।" उसने भी वहीं डेरा डाल दिया। "सब मिलकर अपने बीमार साथी की सेवा करने लगे। कुछ ही समय बाद कड़ाके की सर्दी पड़ने लगी और हिमपात होने लगा।

ओइट्स ने सोचा कि यदि मेरे कारण स्कॉट तथा अन्य साथी यहाँ पड़े रहे, तो वे भी बचकर नहीं जा सकेंगे। अतः एक दिन वह चुपचाप कुछ बहाना बनाकर कैम्प से बाहर चला गया। उसके बाद उसे फिर किसी ने नहीं देखा। इस प्रकार दूसरे साथियों की जान बचाने के लिए उसने अपनी जान दे दी।

अब स्कॉट और उसके अन्य सहयोगी भी वहाँ से चल पड़े। अभी कुछ ही दूर जा पाए थे कि अत्यधिक हिमपात आरम्भ हो गया। उन्होंने फिर अपना तम्बू गाड़ दिया और अन्दर बिस्तर लगा दिए। तूफान अधिक तेज होता गया। कुछ ही समय बाद अत्यधिक शीत के कारण बोवर्ज और विल्सन का खून जमने लगा और उनकी नाड़ी मंद पड़ने लगी। उन्होंने अपने बिस्तर अपने चारों ओर लपेट लिए। किन्तु थोड़ी देर बाद वे भी चिर-निद्रा में सो गए। अब केवल कप्तान स्कॉट रह गया।

अत्यधिक शीतयुक्त तूफान के कारण वह समझ गया कि उसकी भी जान बचने वाली नहीं है। अतः उसने अपनी डायरी में पेंसिल से अपनी इस खोज का सारा वृत्तान्त लिख दिया और कुछ ही समय बाद वह भी इस लोक को छोड़कर चल बसा।

स्कॉट और उसके साथी जब अपने देश को न लौटे, तो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुछ समय बाद एक अन्य दल उनकी खोज के लिए भेजा गया। जब इस दल के यात्री उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ स्कॉट की मृत्यु हुई थी, तो उन्हें वह डायरी मिली। इसी से इस खोज का सारा वृत्तान्त लोगों को विदित हुआ। यह डायरी आजकल लन्दन के संग्रहालय में सुरक्षित है और संसार के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण पृष्ठ है। इससे हमें ज्ञात हुआ कि वे कैसे थे साहस के धनी, जो मौत से खेले !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

8

माँ

[प्रथम दृश्य]

[स्थान—कोहिमा और इम्फाल का पहाड़ी प्रदेश। वर्षा-काल। शाम का समय। धरती और वन-प्रदेश में जल-ही-जल दिखाई पड़ता है। पहाड़ियों के शिखर धुल गए हैं। एक वृद्ध माता द्वार पर खड़ी अपने युवक पुत्र की प्रतीक्षा कर रही है। दूर से आवाज आती है…]

(माँ, ओ माँ !)

माँ—अरे आ गए बेटा !

युवक—हाँ माँ !

माँ—इतनी देर कहाँ लगाई ?

युवक—कुछ नहीं माँ, मित्रों से गपशप में देर हो गई।

माँ—तूने कुछ सुना ?

युवक—क्या माँ ?

माँ—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का सेनापति हर घर से एक युवक माँग रहा है। भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए सेनाएँ कूच करने वाली हैं।

[यह कह कर माँ बेटे के मुँह की ओर देखने लगती है।]

युवक—(उत्साह से भरकर) यह तो शुभ समाचार है माँ ! मैं भी युद्ध में जाऊँगा। मातृ-भूमि की सेवा करने का अवसर नहीं छोड़ूंगा। (कुछ सोचकर) परन्तु…

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माँ—परन्तु क्या ?

युवक—……परन्तु तुम्हें किसके सहारे छोड़ जाऊँ माँ ! मेरे और तेरे सिवा घर में और है कौन ? तुम बूढ़ी हो, तुम्हारी देखभाल कौन करेगा ?

माँ—बेटा, मेरी रक्षा की चिन्ता न कर। देख, हम सबकी माता—भारतमाता तुझे बुला रही है। कल सूरज निकलने के समय कर्नल तुझ जैसे वीर ज़वानों की छाती नाप लेगा। इस तरह नये सैनिक भर्ती किये जायेंगे।

युवक—(गर्व से छाती फुलाता हुआ) माँ ! मेरी छाती का नाप ले ले वह। मेरी छाती काफी चौड़ी और बलिष्ठ है।

माँ—तुम सबसे आगे पहली पंक्ति में जाकर खड़े होना।

युवक—धन्य हो माँ ! मैं ऐसा ही करूँगा। तू चिन्ता न कर।

[द्वितीय दृश्य]

[हजारों नवयुवक पंक्तियों में खड़े हैं। सूर्य की किरणें धरती पर छा रही हैं। बिगुल बजता है। कर्नल आता है।]

कर्नल—(पहली पंक्ति के पहले युवक से) युवक ! तुम्हारा नाम ?

युवक—अर्जुन सिंह।

कर्नल—उम्र ?

युवक—बीस साल।

कर्नल—घर पर कौन-कौन हैं ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

युवक—केवल माँ......

कर्नल—और कोई नहीं ? तो तुम्हें भर्ती नहीं किया जा

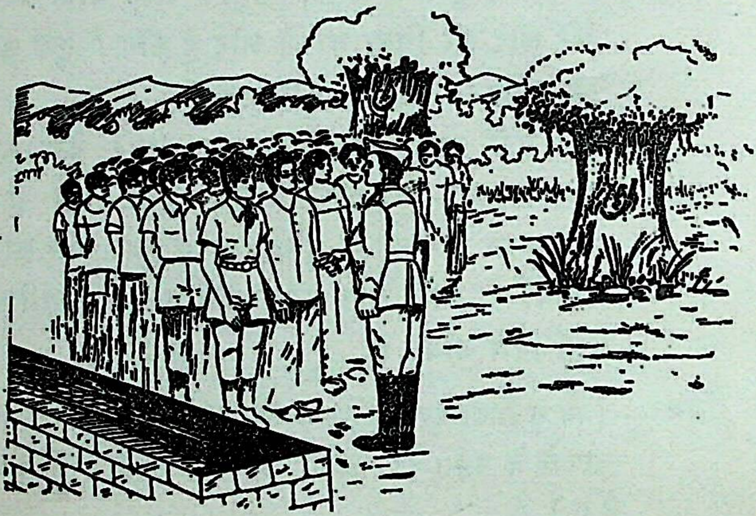

सकता। नेताजी की आज्ञा है कि परिवार के अकेले बेटे को भर्ती न किया जाए।

युवक—तो क्या मुझे अपनी जन्म-भूमि की सेवा का अवसर ही न मिलेगा ?

कर्नल—तुम्हारी वीरता की प्रशंसा करता हूँ युवक ! पर नेताजी की आज्ञा नहीं टाली जा सकती।

[युवक निराश होकर गर्दन लटकाए पंक्ति से बाहर आ जाता है।]

(तृतीय दृश्य)

[समय—प्रभात ! रंगरूटों की कतार में वही युवक सबसे आगे खड़ा है।]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर्नल—नौजवान ! तुम फिर आ गए ?

युवक—हाँ कर्नल साहब……

कर्नल—तुम्हारी माँ……

युवक—कल रात उसकी मृत्यु हो गई ।

कर्नल—उसे क्या कष्ट था ?

युवक—जब उसे पता लगा कि मुझे भर्ती नहीं किया गया, तो इस दुःख से वह चारपाई से फिर नहीं उठ सकी और मृत्यु के समय मेरी आँखों में आँसू देखकर

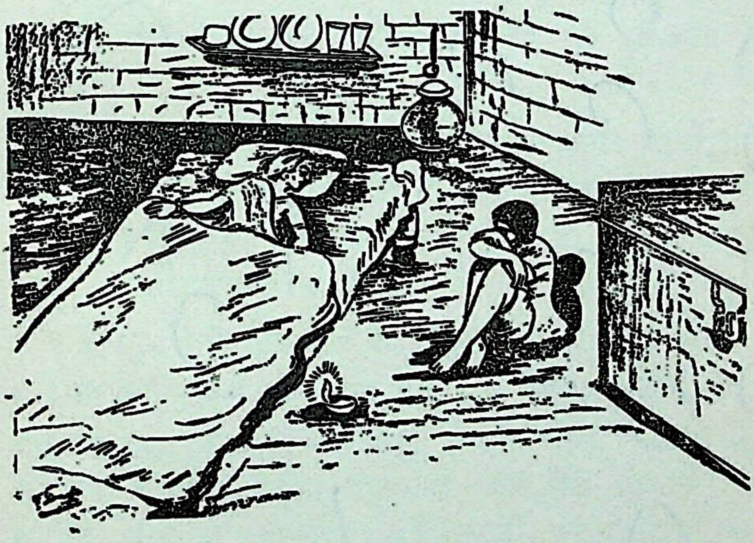

बोली—"मैं तुम्हारी माँ नहीं । तुम्हारी माँ भारत माता है ।"

कर्नल—(एटेन्शन होकर) मैं उस माता को सिर झुकाकर सम्मान देता हूँ । ऐसी वीर माताओं पर हमें गर्व

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है । धन्य है वह माँ । युवक, तुम्हें आजाद हिन्द सेना में भर्ती किया जाता है । हमें आशा है तुम भारत माता के सच्चे सपूत सिद्ध होगे ।

युवक—धन्यवाद कर्नल ! मैं आपकी आशा को पूरा करने के लिए अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करूँगा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

9

बदला

8 नवम्बर, 1927 को भारत के अंग्रेज़ वायसराय ने घोषणा की, "भारत में शासन-सुधार किस प्रकार होना चाहिए, इसकी जाँच के लिए इंग्लैंड की सरकार 'साइमन कमीशन' भेजेगी। सर जॉन साइमन इसके अध्यक्ष होंगे। यह कमीशन जाँच-पड़ताल करके अपनी रिपोर्ट इंग्लैंड की सरकार को देगा।"

3 फरवरी, 1928 को यह कमीशन बम्बई आ पहुँचा। इससे पहले ही देश के नेताओं ने साइमन कमीशन के बहिष्कार का निर्णय किया था। नेताओं का कहना था कि हमें शासन-सुधार नहीं, स्वतन्त्रता चाहिए।

3 फरवरी के दिन सारे देश में हड़ताल की गई। बम्बई में साइमन कमीशन के आने पर काले झंडे दिखाकर नारे लगाए गए, 'साइमन, गो बैक' (साइमन, वापिस जाओ)। जहाँ-जहाँ साइमन कमीशन पहुँचा, वहाँ-वहाँ काले झंडे दिखाकर उसे वापिस जाने को कहा गया। कई स्थानों पर गोली भी चली और अनेक देशभक्त मारे गए।

जब साइमन कमीशन लाहौर पहुँचा, तो लाला लाजपतराय के नेतृत्व में डेढ़ लाख लोगों का विराट् जलूस साइमन कमीशन का बहिष्कार करने के लिए रेलवे स्टेशन जा पहुँचा। बहुत भीड़ थी। लाहौर के पुलिस सुपरिन्टेंडेंट मिस्टर स्कॉट दूसरे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अफसरों के साथ स्टेशन पर मौजूद थे। भीड़ बढ़ती जा रही थी। उसी के साथ 'साइमन, वापिस जाओ' का नारा भी धरती-आकाश को गुंजा रहा था।

स्कॉट ने असिस्टेंट पुलिस सुपरिन्टेंडेण्ट मिस्टर सांडर्स को लाठी चार्ज करने का हुक्म दिया। सांडर्स का आदेश पाकर पुलिस भीड़ पर टूट पड़ी। भीड़ कभी पीछे हटती, कभी आगे बढ़ती, बिखरती और फिर जमकर नारे लगाती थी। पुलिस के सिपाही लाठियां बरसाते हुए विरोध-प्रदर्शकों के नेता लाला लाजपतराय तक जा पहुँचे। उस समय नौजवान भारत सभा के युंवक लाला जी को अपने घेरे में लिए हुए खड़े थे। पुलिस के सिपाही युवकों को धकेल कर लाला जी तक जा पहुँचे। एक साथ कई लाठियाँ बरसीं। लाला जी की छतरी टूट गई। कुछ लाठियाँ उनके कंधे पर लगीं, कुछ छाती पर।

उसी शाम नगर में एक विशाल सभा हुई। इस सभा में शेर की तरह दहाड़ते हुए लाला लाजपतराय ने कहा, "जो सरकार निहत्थी प्रजा पर इस तरह के जालिमाना हमले करती है, उसे सभ्य सरकार नहीं कहा जा सकता और ऐसी सरकार कायम नहीं रह सकती। मैं आज चैलेंज देता हूँ कि इस सरकार की पुलिस ने मुझ पर जो वार किया है, वह एक दिन इस सरकार को ले डूबेगा। मैं घोषणा करता हूँ कि मुझ पर जो चोट पड़ी है, वह भारत में अंग्रेजी राज्य के कफन की आखिरी कील साबित होगी।"

17 नवम्बर, 1928 को लाला जी का देहावसान हो गया। लाला जी की अर्थी के साथ लगभग डेढ़ लाख व्यक्ति थे। सभी नेताओं तथा साधारण जन की आँखों में आँसू थे। नौजवानों के हृदय में जहाँ दुःख था वहाँ क्रोध का आवेश भी लहरें मार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रहा था। एक-दो आवाजें आईं, "खून का बदला खून से लेंगे।" परन्तु नेताओं के समझाने पर ये आवाजें दब गईं।

एक महीने बाद लाहौर में 'हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना' की बैठक हुई। इसमें भगतसिंह ने कहा, "लाला लाजपतराय पर की गई चोट सारे राष्ट्र का अपमान है। वे राष्ट्रीय नेता थे। इस अपमान का बदला जरूर लिया जाए।" निर्णय के अनुसार यह दायित्व चन्द्रशेखर, भगतसिंह और राजगुरु को सौंपा गया। जयगोपाल इनका सहायक था।

17 दिसम्बर, 1928 की दोपहर बाद। जयगोपाल पुलिस के दफ्तर के सामने यह देखने गया कि सांडर्स दफ्तर में है या नहीं। जयगोपाल कई दिन से सांडर्स के आने-जाने पर नजर रख रहा था। वह सांडर्स को स्कॉट समझे हुए था। राजगुरू भी वह जगह देख चुका था। साइकिल का इसे अभ्यास नहीं था, इसलिए वह एक रिवाल्वर लेकर मजे-मजे में पुलिस दफ्तर की तरफ चला कि ठीक समय पर, ठीक जगह पहुँच जाए। इसके बाद चन्द्रशेखर आजाद और भगतसिंह साइकिलों पर आए। दो दिन पहले ही तय कर लिया गया था कि कौन कहाँ खड़ा होगा, मुकाबला होने पर क्या किया जाएगा और पीछा करने वालों से बचकर किस रास्ते से भागा जाएगा।

यह तय था कि भगतसिंह और राजगुरु सांडर्स पर ठीक उस समय गोली चलाएँगे, जब वह पुलिस दफ्तर के अहाते की सड़क के फाटक से बाहर निकलेगा। वहाँ पास ही जयगोपाल एक साइकिल लिए ऐसे खड़ा था, मानो बिगड़ गई साइकिल को ठीक कर रहा हो। यहाँ साइकिल रखने का मतलब यह था कि यदि राजगुरु और भगतसिंह की गोली चुक जाए तो चन्द्रशेखर तुरन्त जयगोपाल से साइकिल लेकर सांडर्स का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

 CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पीछा करके उसे गोली मार सके।

चन्द्रशेखर आजाद पुलिस दफ्तर के ठीक सामने, डी० ए० वी० कालेज के जंगले के भीतर उस ओर खड़े थे जहाँ से गोली चलाने के बाद भगतसिंह और राजगुरु डी०ए०वी० कालेज का अहाता पार करके बोर्डिंग की तरफ भागने वाले थे। मतलब यह था कि यदि पुलिस वाले भगतसिंह और राजगुरु का पीछा करें, तो आजाद पीछा करने वालों का रास्ता रोककर, भगतसिंह और राजगुरु को भागने का अवसर देंगे।

आजाद के हाथ में माउज़र पिस्तौल थी, माउज़र पिस्तौल, साधारण बन्दूक से अधिक दूर तक मार करती है। माउज़र में दस गोलियाँ एक साथ मैगज़ीन में भरी जाती हैं। आजाद गोलियों से भरी दो मैगज़ीन जेब में और भी रखे हुए थे।

घटना से पहले संदेह न हो, इसके लिए भगतसिंह और राजगुरु पुलिस दफ्तर की सड़क पर खुलने वाले फाटक से जरा हटकर खड़े हुए।

सांडर्स दफ्तर के कमरे से बाहर आया। वह ज्योंही मोटर साइकिल चालू करके आहिस्ता-आहिस्ता फाटक की ओर बढ़ा, त्योंही आड़ में खड़े जयगोपाल ने राजगुरु और भगतसिंह को संकेत दिया। सांडर्स धीमी चाल से फाटक तक पहुँचा ही था कि राजगुरु ने लपककर एक गोली उसकी गर्दन में दाग दी। सांडर्स उसी गोली से मोटर साइकिल समेत गिर पड़ा। उसके मुँह से मामूली चीख ही निकल पाई।

भगतसिंह ने शंका का कोई अवसर न रहने देने के लिए सांडर्स के सिर और कंधों पर चार-पाँच गोलियाँ दाग दीं। फिर राजगुरु और भगतसिंह डी०ए० वी० कालेज के अहाते की ओर लपके।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सांडर्स के गिरते ही बरामदे में खड़ा एक सिपाही चिल्ला उठा। ट्रैफिक इंस्पेक्टर फर्न और दो दूसरे सिपाही भगतसिंह और राजगुरु की ओर दौड़े। भगतसिंह ने घूमकर फर्न पर

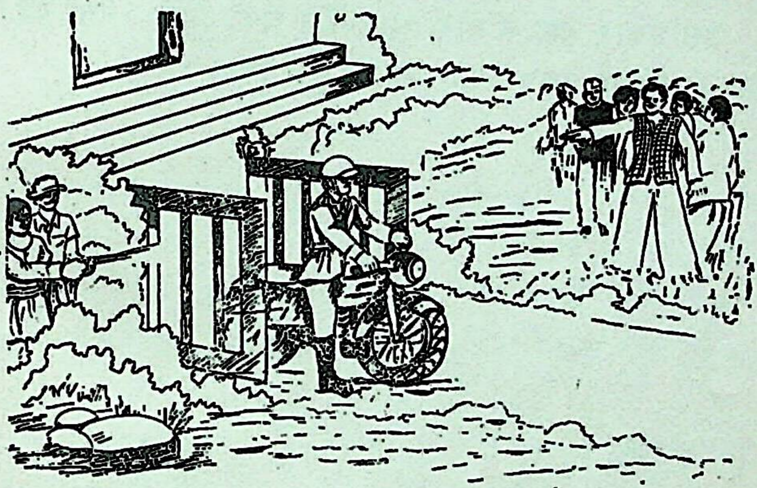

गोली चला दी। फर्न झुककर गिर पड़ा। गोली उसे न लगी। दूसरे सिपाही आगे बढ़ने से रुक गये।

आज़ाद ने अपने स्थान से चिल्लाकर राजगुरु और भगतसिंह से कहा, "चलो।"

भगतसिंह और राजगुरु आगे निकल गए। आज़ाद उनके पीछे रास्ता रोककर खड़े हो गये। इतने में हेडकांस्टेबल चन्दनसिंह गाली देता हुआ उनके पीछे भागा। आज़ाद ने अपनी माउज़र पिस्तौल राईफल की तरह उठाकर उसे धमकाया, "खबरदार, पीछे हटो।"

दो सिपाही तो रुक गये, परन्तु चन्दनसिंह न रुका। आज़ाद ने गोली चला दी। चन्दनसिंह बाँहें फैलाए मुँह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के बल गिर पड़ा । आज़ाद भी भगतसिंह और राजगुरु के पीछे-पीछे कालेज का अहाता पार करके बोर्डिंग हाउस में चले गए। इस समाचार को सुनकर अंग्रेज सरकार के दुःख का और भारतीय जनता के हर्ष का ठिकाना न था।

इस प्रकार देश के वीर जवानों ने अपने प्यारे नेता की मौत का बदला लेकर अपने प्रण को पूरा किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

10

चन्द्रहास

(1)

केरल में मेधावी नाम का एक राजा राज्य करता था। वह बहुत धर्मात्मा था। उसका एक पुत्र था, जिसका नाम था चन्द्रहास। अभी चन्द्रहास छोटा ही था कि शत्रुओं ने केरल पर चढ़ाई कर दी। राजा मेधावी वीरतापूर्वक लड़ता हुआ मारा

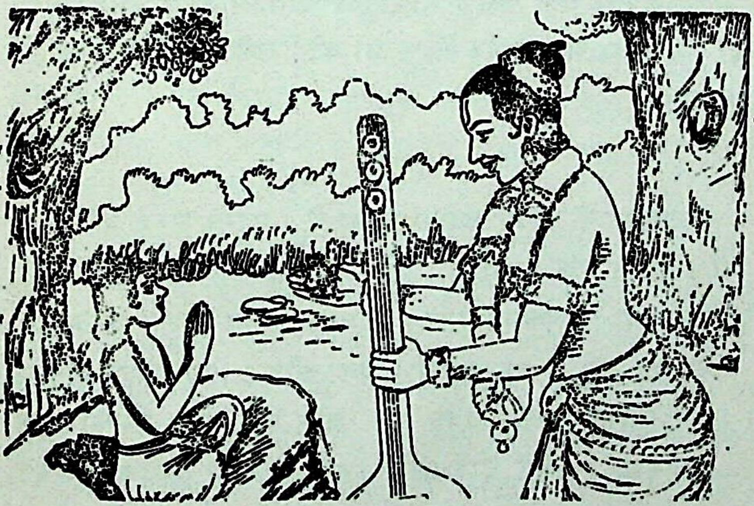

गया। चन्द्रहास की माता अपने पति के साथ सती हो गई। दुर्ग और महलों पर शत्रुओं का अधिकार होने से पहले ही चन्द्रहास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की धाय उसे लेकर चुपके-से नगर से निकल गई। वह कुन्तलपुर में जाकर रहने लगी और मेहनत-मज़दूरी करके चन्द्रहास का पुत्र की भांति पालन-पोषण करने लगी। एक दिन वह बीमार हुई और चल बसी। अब चन्द्रहास अनाथ हो गया।

एक स्त्री ने चन्द्रहास का चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख देखकर उसे पालने का निश्चय किया। वह चन्द्रहास को अपने घर ले गई और बड़े लाड़-प्यार से पालने लगी। वह अपने हाथ से उसे नहलाती, सुन्दर वस्त्र पहनाती, खिलाती-पिलाती और उसका सुन्दर मुखड़ा देखकर बलि-बलि जाती।

एक दिन घूमते-घूमते नारद मुनि उधर आ निकले। उन्होंने बालक चन्द्रहास को शालिग्राम की एक मूर्ति दी उन्होंने उसे राम-नाम का मन्त्र भी दिया। चन्द्रहास स्नान के बाद राम-नाम का मन्त्र जपता और उसके बाद कुछ खाता-पीता। उसका मुख सुन्दर और वाणी मधुर थी। जो कोई उसे देखता मुग्ध हो जाता था।

(2)

कुन्तलपुर के राजा बड़े धर्मात्मा थे। परन्तु उनके कोई पुत्र न था। केवल एक कन्या थी, जो रूप और गुण में बढ़-चढ़कर थी। नाम था चम्पकमालिनी। राजगुरु महर्षि गालव के आदेश से राजा का अधिक समय हरि-भजन और सत्संग में ही बीतता था। पर उनका मन्त्री बहुत धूर्त और दुष्ट था। उसका नाम था—धृष्टबुद्धि। उसने धीरे-धीरे राज्य के सभी अधिकार अपने हाथ में ले लिए थे। राजा तो नाममात्र का राजा रह गया था। धृष्टबुद्धि के दो पुत्र थे—मदन और अमल; और एक अति सुन्दरी कन्या थी जिसका नाम था—विषया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक दिन सायंकाल चन्द्रहास अन्य बालकों के साथ कीर्तन करता हुआ मन्दिर की ओर जा रहा था। मधुर ध्वनि सुनकर और भी बहुत-से बालक घरों से बाहर आकर उस मण्डली में मिलते जाते थे। घूमते-घामते यह मण्डली धृष्टबुद्धि के महलों के नीचे जा पहुँची। उस समय धृष्टबुद्धि का पुत्र मदन जो हरि-भक्त था, साधुओं के साथ धर्म-चर्चा कर रहा था। उसने कीर्तन की मधुर ध्वनि सुनकर चन्द्रहास को अन्दर बुलवाया। चन्द्रहास के साथ उसकी मण्डली भी महल में चली गई। चन्द्रहास के साथ मिलकर मदन भी कीर्तन करता हुआ नाचने-गाने लगा। इतने में धृष्टबुद्धि वहाँ आ गया। यह देख उसने क्रोध में भरकर कहा, "यह क्या बकवास है ? महल में ऊधम क्यों मचा रखा है ?"

यह सुनते ही सब बालक जहाँ के तहाँ रुक गए। धृष्टबुद्धि ने चन्द्रहास को देखकर पूछा, "यह कौन है? यहाँ क्यों आया है?" साधुओं ने उत्तर दिया, "यह एक अनाथ बालक है, जो सुन्दर, सुशील और शुभ लक्षणों से युक्त है। आप इसे स्नेह भाव से अपने घर रहने दीजिए।"

धृष्टबुद्धि ने साधुओं की आज्ञा तो मान ली परन्तु मन में सोचा, "घर में रख लूँ और राह के भिखारी इस छोकरे को अपने धन-ऐश्वर्य का स्वामी बना दूँ ? मदन और अमल का अधिकार इसे दे दूँ यह कैसे हो सकता है?" जब ऋषि चले गए तो धृष्टबुद्धि ने एक हत्यारे को बुलाकर कहा, "देखो, इस बालक को वन में ले जाओ और इसका काम तमाम कर दो। देखने में राजकुमार-सा लगता है। हो सकता है मदन और अमल के रास्ते में बाधा बने। मैं अपने लड़कों को सारा राज्य सौंपना चाहता हूँ।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(3)

हत्यारा चन्द्रहास को निर्जन वन में ले गया। उसने तलवार निकाल ली। चन्द्रहास समझ गया, 'यह मुझे मारना चाहता है।' उसने निर्भयता से कहा, "भाई जरा ठहरो। मुझे भगवान की पूजा कर लेने दो।" हत्यारे ने उसकी बात मान ली। चन्द्रहास ने शालिग्राम की मूर्ति निकालकर वन के फूल चढ़ा कर पूंजा आरम्भ कर दी। उसकी आँखों में प्रेम के आँसू उमड़ आए।

उसे देखकर हत्यारे का हृदय पिघल गया। उसने बालक को गले से लगाया। लेकिन फिर सोचा, "धृष्टबुद्धि को क्या निशानी दूंगा? यदि उसे पता लगा कि मैंने बालक को छोड़ दिया है, तो वह दुष्ट मुझे मरवा देगा। अचानक हत्यारे की नज़र चन्द्रहास के पैरों पर पड़ी। उसके एक पैर में छः उँगलियाँ थीं। हत्यारे ने तलवार से वह छठी उँगली काट ली। बालक को वहीं छोड़कर हत्यारा नगर को लौट आया। धृष्टबुद्धि को उँगली दिखलाकर उसने इनाम पाया।

इधर घोर वन में बालक अकेला पड़ा था। पैर में पीड़ा हो रही थी; परन्तु मुख पर राम-नाम का मन्त्र था। आकाश में चन्द्रमा अपनी पूरी कलाओं के साथ निकल आया। चारों ओर चाँदनी छा गई। वन की हरिणियाँ आकर चन्द्रहास के पैर चाटने लगीं। चन्द्रहास उन्हें गले लगाने लगा।

कुन्तलपुर के अधीन एक छोटा-सा राज्य था—चन्दनपुर। वहाँ के राजा का नाम कुलिन्दक था। वह धर्मात्मा था। उसका राज्य धन-धान्य से सम्पन्न था। केवल एक ही अभाव था कि राजा पुत्रहीन था।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ईश्वर की माया, राजा कुलिन्दक उसी वन से जा रहा था। राम-नाम का कीर्तन सुनकर राजा उधर गया। बालक चन्द्रहास की मोहनी मूर्ति देखकर वह मुग्ध हो गया। उसने बालक को गोद में उठाकर चूम लिया। फिर उसके शरीर की धूल झाड़कर उसके माता-पिता का नाम पूछने लगा।)५

चन्द्रहास ने कहा, "मेरे माता-पिता श्रीकृष्ण हैं।"

राजा कुलिन्दक ने कहा, "फिर तो श्रीकृष्ण ने तुम्हें मेरे ही लिए भेजा है। तुम मेरे पुत्र हो।" इतना कहकर राजा ने चन्द्रहास को गले लगा लिया। फिर उसे घोड़े पर बिठाकर राजा महलों में ले आया। रानी की गोद भर गई। राजा ने दरबार में चन्द्रहास को दत्तक पुत्र के रूप में ग्रहण किया। सारे राज्य में आनन्द छा गया।

पुरोहित से यज्ञोपवीत ग्रहण करने के अनन्तर चन्द्रहास ने विद्यारम्भ किया। थोड़े ही काल में वह वेदों, शास्त्रों तथा सभी सांसारिक विद्याओं में निपुण हो गया। अपने गुणों से वह सारे राज-परिवार तथा जनता का प्रिय हो गया। अब वह सेना का कार्य संभालने लगा था। कई बार उसे युद्ध में जाना पड़ा और बड़े-बड़े राज्यों पर उसने विजय प्राप्त की।

(4)

चन्दनपुर राज्य की ओर से कुन्तलपुर को प्रति वर्ष दस हजार स्वर्ण-मुद्राएँ कर-स्वरूप दी जाती थीं। इस बार राजा कुलिन्दक ने यह काम चन्द्रहास को सौंपा। चन्द्रहास ने दस हजार स्वर्ण मुद्राओं के साथ ही बहुत-से रत्नमणि आदि भी कुन्तलपुर भेज दिए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इससे कुन्तलपुर का राजा तो बहुत प्रसन्न हुआ; परन्तु धृष्टबुद्धि जलभुन गया। उसने कहा— युवराज ने कई युद्धों में विजय पाई है और अपना घमण्ड दिखाने के लिए रत्न-मणि आदि भेजे हैं। राजा ने मंत्री को बहुत समझाया; परन्तु धृष्टबुद्धि के मन में ईर्ष्या की आग जलने लगी। उसने चन्दनपुर जाकर वहाँ की अवस्था अपनी आँखों से देखने का निश्चय किया। राजा ने उसे अनुमति दे दी।

जब धृष्टबुद्धि चन्दनपुर पहुँचा, तो राजा और युवराज ने उसका हृदय से स्वागत किया। धृष्टबुद्धि युवराज को पहचान गया और सोचने लगा, "अरे! यह तो वही है जिसे मरवाने के लिए मैंने जंगल में भेजा था। तो क्या हत्यारे ने मुझे ही धोखा दिया? अच्छा, यह अब मुझसे बचकर कहाँ जायेगा?" इतना सोचकर उसने अपने पुत्र मदन के नाम एक गुप्त पत्र लिखा। फिर हँसकर चन्द्रहास के हाथ में देते हुए कहा, "युवराज! बहुत आवश्यक कार्य है। इससे तुम्हारा और हमारा बड़ा हित होगा। तुम आज ही कुन्तलपुर जाओ और यह पत्र कुमार मदन को दे देना। उसी के हाथ में देना, और किसी के नहीं। देखना, रास्ते में पत्र खुलने न पाए। इसका रहस्य मदन के सिवाय और किसी से न कहना।"

(5)

चन्द्रहास जल्दी से तैयार होकर घोड़े पर सवार हुआ और कुन्तलपुर की ओर चल पड़ा। पहुँचते-पहुँचते शाम हो गई। नगर से बाहर कुन्तलपुर के राजा का सुन्दर बाग था। थकान मिटाने और जल पीने के लिए चन्द्रहास घोड़े से उतरा। घोड़े

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को बाँधने और जल पीने के बाद वह मखमल जैसी घास पर लेट गया। शीतल-मन्द सुगन्धित वायु के झोंकों से उसे नींद आ गई।

इतने में राजकुमारी चम्पकमालिनी और मन्त्री की पुत्री विषया सखियों के साथ टहलती हुई उधर आ निकलीं। हँसती, खिलखिलाती, हास-परिहास करती हुई वे क्रीड़ाएँ करने लगीं। कुछ देर बाद राजकुमारी और सखियाँ तो चली गईं, विषया वहीं रह गई। चन्द्रहास को देखकर वह मोहित हो गई। उसने मन-ही-मन उसे पति के रूप में वरण कर लिया। उसने देखा राजकुमार के हाथ में एक पत्र है। वह पत्र विषया ने खींच लिया। अपने पिता के हस्ताक्षर उसने पहचान लिए। पिता ने वह पत्र भाई मदन के नाम भेजा है, यह देखकर कुतूहल से उसने पत्र खोल लिया। जब उसने पत्र पढ़ा, तो उसका शरीर थरथर काँपने लगा और हृदय व्याकुल हो गया। पत्र में लिखा था—

"प्रिय पुत्र मदन, यह पत्र देखते ही पत्रवाहक को विष दे देना। कुल, विद्या, शूरता, सुन्दरता कुछ भी न देखना। तभी मेरा हृदय शीतल होगा।"

विषया सोचने लगी, "ऐसे सुन्दर, सलोने और सजीले राजकुमार को पिताजी विष क्यों दिलवाने लगे। अवश्य ही इसे मेरे योग्य वर देखकर आनन्द की विह्वलता में यह पत्र लिखा है और जल्दी में उनसे यह भूल हो गई है। वास्तव में 'विष दे देना' की जगह 'विषया दे देना' होगा। पिताजी ने हृदय शीतल होने की बात लिखी है, ऐसे श्रेष्ठ नर को जामाता के रूप में पाकर भला किसका हृदय शीतल न होगा? इसीलिए पिताजी ने इस राजपुत्र के हाथ तुरन्त मुझे दे देना चाहा है।"

इसी तरह बहुत-कुछ सोच-विचार कर उसने 'विष दे देना'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के बीच में से 'दे' को मिटाकर उसके स्थान पर 'या' अक्षर लिख दिया, जिससे 'विषया देना' स्पष्ट पढ़ा जाने लगा। इसके बाद वृक्ष की गोंद से पत्र को बन्द करके विषया ने वह सोते हुए राजकुमार के हाथ में रख दिया।

थोड़ी देर बाद चन्द्रहास की आँखें खुलीं। साँझ घिर आई थी। वह तुरन्त उठकर घोड़े पर सवार हुआ और जाकर उसने मदन के हाथ में वह पत्र दे दिया। पत्र-पढ़कर तथा युवराज चन्द्रहास से मिलकर मदन के हर्ष की सीमा न रही। उसने पुरोहित को बुलाया और उसी समय विषया का विवाह चन्द्रहास के साथ कर दिया। उसने मुक्तहस्त से दान दिया। कन्यादान राजा के हाथों कराया गया; क्योंकि कन्या के पिता मन्त्री धृष्टबुद्धि वहाँ न थे।

तीन दिन बाद धृष्टबुद्धि वहाँ आया। सारा वृत्तान्त सुनकर उसके हृदय पर गहरी चोट लगी; परन्तु वह मन का दुःख छिपा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गया उसने सोचा, "यह मेरा शत्रु है। इसे मिटाना ही होगा, चाहे मेरी बेटी विधवा हो जाए।"

पहाड़ी पर भवानी का मन्दिर था। धृष्टबुद्धि ने एक हत्यारे को सिखलाकर वहाँ भेज दिया कि आज सायंकाल चन्द्रहास जब भवानी के मन्दिर में आए, तो उसका सिर काट लेना।

इधर कपट-भरी हँसी हँसते हुए उसने चन्द्रहास से कहा, "बेटा, भवानी हमारी कुलदेवी हैं। प्रत्येक शुभ कार्य के उपरान्त उनका पूजन करने की हमारी कुल-रीति है। अतः आज सायं-काल तुम पूजन की सामग्री और भेंट लेकर भवानी-मन्दिर चले जाना।"

ससुर की आज्ञा मानकर साँझ होने से कुछ देर पहले ही, सरल-हृदय चन्द्रहास पूजा-सामग्री तथा भेंट लेकर भवानी-मन्दिर की ओर चला।

मार्ग में उसे मदन मिल गया। उसने कहा, "चन्द्रहास, आपको कुन्तलपुर नरेश ने आवश्यक कार्य से अभी बुलाया है। तुम पूजा सामग्री मुझे दे दो। मैं पूजा कर आता हूँ। तुम तुरन्त नरेश के पास पहुँचो।"

मदन को पूजा की सामग्री लाते देख हत्यारा काँप उठा। उसने मन में कहा, "यह तो चन्द्रहास नहीं। यह तो मंत्रि-पुत्र मदन है। इसे मारूँगा, तो कुन्तलपुर-नरेश के हाथों मैं कभी बच न सकूँगा।" ऐसा सोचकर वह वहाँ से भाग गया।

उधर चन्द्रहास को आया देख कुन्तल-नरेश का हृदय प्रसन्नता से खिल गया। उन्होंने उसे कण्ठ से लगा लिया और कहा, "बेटा, मैं तुम्हें अपनी जगह कुन्तलपुर का राजा बनाता हूँ। मेरे कोई पुत्र नहीं, अतः अपनी कन्या चम्पकमालिनी के साथ तुम्हारा विवाह करके स्वयं संन्यास लेना चाहता हूँ।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चन्द्रहास ने कहा, "राजन्, और तो सब ठीक है; परन्तु आपके आशीर्वाद से मेरा विवाह तो विषया से हो चुका है। फिर मैं दूसरा विवाह कैसे कर सकता हूँ ?"

राजा ने कहा, "राजाओं के एक से अधिक विवाह होते ही हैं—दशरथ के तीन रानियाँ थीं। और फिर विषया को इसमें कोई आपत्ति नहीं—विषया और चम्पकमालिनी दो शरीर एक प्राण हैं। बचपन से दोनों का पालन-पोषण एक साथ हुआ है।"

इतने में विषया चम्पकमालिनी को वधू-वेश में सजाकर वहाँ ले आई। पहले गालव मुनि ने चन्द्रहास और चम्पकमालिनी को विवाह-बन्धन में बांधा और फिर चन्द्रहास का विधिवत राजतिलक कर दिया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

11

होनी है बलवान !

भारत में महाराज विक्रमादित्य अपनी न्यायप्रियता, वीरता, दया तथा दान आदि गुणों के कारण बहुत प्रसिद्ध हो चुके हैं। दूर-दूर से दीन-दुःखी लोग महाराज से सहायता लेने आते थे। महाराज भी जी खोलकर उनकी सहायता किया करते थे।

एक दिन एक बूढ़ा ब्राह्मण दरबार में आया। कहने लगा, "महाराज, मैं बड़ी कठिनाई से जवान बेटी के लिए वर ढूंढ पाया हूँ। दो सप्ताह के भीतर मुझे उसका विवाह करना है। यदि यह मुहूर्त टल गया, तो सात साल तक बेटी का विवाह होने का कोई मुहूर्त नहीं है।"

महाराज ने अपने कोषाध्यक्ष से कहा, "इस ब्राह्मण को राजकोष से एक हजार स्वर्ण-मुद्राएँ दे दी जाएँ।" महाराज की आज्ञा का पालन किया गया। ब्राह्मण महाराज को धन्यवाद देकर उनका गुणगान करता हुआ घर चला गया।

मार्ग में एक नाला था। पर्वतीय नाले में स्वच्छ जल था। ब्राह्मण ने वहाँ बैठकर अपनी गठरी खोली और खाना खाने लगा। खाना खाकर वह नाले पर जल पीने लगा। लौटकर क्या देखता है कि स्वर्ण-मुद्राओं की थैली गायब है।

वह चिल्लाकर कहने लगा, "महाराज विक्रमादित्य के राज्य में किसकी हिम्मत है कि चोरी करे ?" परन्तु आस-पास कोई मनुष्य दिखाई न दिया। कुछ देर ढूंढने के बाद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निराश होकर वह घर की तरफ सिर झुकाए चल पड़ा।

घर पहुँचा तो पत्नी नें पूछा, "महाराज ने क्या दिया ?" ब्राह्मण के मुँह से शब्द न निकला, आँखों से आँसू बरस पड़े।

ब्राह्मणी ने सारी बात सुनकर पति को धीरज बँधाया और उसे फिर महाराज के पास जाने के लिए कहा। ब्राह्मण फिर राजदरबार में जा पहुँचा। महाराज नें जब ब्राह्मण की बात सुनी तो वे चकित रह गए। उन्होंने ब्राह्मण को फिर एक हज़ार स्वर्ण-मुद्राएँ देकर उसकी रक्षा के लिए एक सिपाही साथ भेज दिया। रास्ते में ब्राह्मण को थका हुआ जानकर सिपाही ने स्वर्ण-मुद्राओं की थैली उससे लेकर स्वयं उठा ली।

आगे एक झरना आया। दोनों को बहुत प्यास लगी थी। ब्राह्मण और सिपाही ने सामान एक ओर रखकर अंजली भर-भरकर झरने का जल पिया। जब वे सामान के पास आए तो स्वर्ण-मुद्राओं की थैली वहाँ न थी। इससे ब्राह्मण को ही नहीं सिपाही को भी बहुत दुःख हुआ। ब्राह्मण तो अब महाराज़ के पास जाना नहीं चाहता था; परन्तु सिपाही उसे खींचकर ले गया।

महाराज ने सारी बात सुनी तो वे बहुत हैरान हुए। स्वयं उन्होंने एक सहस्र स्वर्ण-मुद्राएँ राजकोष से फिर मँगवा । अब महाराज ने स्वयं वह थैली उठा ली और ब्राह्मण से कहा, "चलो, हम तुम्हारे घर तक यह थैली पहुँचाकर आएँगे।"

रास्ते में एक नदी थी। दोनों नदी के किनारे-किनारे जा रहे थे। अचानक महाराज को लगा कि स्वर्ण-मुद्राओं की थैली कोई खींच रहा है। पलक झपकते ही थैली गायब हो गई! "कहाँ गई? कौन ले गया ? कौन-सा अदृश्य चोर है?" महाराज के मुँह से ये शब्द निकले ही थे कि एक वाणी गूँज गई,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"मैं होनी हूँ। ब्राह्मण का तमाशा देख लिया। अब तुम सँभल कर रहना।"

महाराज ने मन में सोचा, "जब तक होनी का पता न लगा लूँगा। तब तक राजधानी नहीं लौटूँगा।"

भटकते-भटकते महाराज थककर चूर हो गये। कपड़े पुराने होकर फट गये। बाल बढ़ गये। रूप-रंग बिगड़ गया। अब उन्हें कोई पहचान नहीं सकता था कि वे महाराज विक्रमादित्य हैं। एक-दो बार उनके मन में विचार आया कि राजधानी लौट जाएँ। परन्तु फिर उन्होंने सोचा, "एक बार निश्चय करके उससे हट जाना धीर मनुष्य का काम नहीं।"

महाराज चलते गये—चलते गये। अब उन्हें नींद सताने

लगी। झरने के किनारे एक विशाल पेड़ के नीचे वे लेट गये। लेटते ही प्रगाढ़ निद्रा में मग्न हो गए।

इतने में तीन लुटेरे उधर आ निकले। उन्होंने पास वाले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राज्य के राजकोष से धन लूटा था। वे उस धन को आपस में बाँट रहे थे। जिस कपड़े में वे धन लाये थे उस पर राज्य की मोहर थी। लुटेरों ने वह कपड़ा अपने पास रखना उचित न समझा। जब वह उस कपड़े को खड्डे में फेंकने लगे, तो उन्हें पेड़ के नीचे एक भिखारी सोया हुआ दिखाई दिया। उन्हें क्या पता था कि यह कौन है। उन्होंने वह कपड़ा उसी पर डाल दिया। फिर वे लुटेरे वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गये।

जिस राज्य में चोरी हुई थी, उसके सिपाही चोरों को ढूँढते हुए उधर आ निकले। भिखारी के शरीर पर शाही वस्त्र को देखकर उन्होंने उसे पकड़ लिया। थाने में ले जाकर पूछ-ताछ की गई। कुछ मारपीट भी की गई। अन्त में उसे निरपराध जानकर छोड़ दिया गया। वह बाजार के एक कोने में आ बैठा। उधर से एक तेलिन जा रही थी। उसके घाव देखकर उसे बड़ी दया आई। वह उसे घर ले गई। कहने लगी, "आज से तुम मेरे भाई और मैं तुम्हारी बहन। मैं तुम्हारे घाव ठीक कर दूँगी। फिर तुम कुछ भी काम ढूँढ़ लेना।" तेलिन के मरहम-पट्टी करने से भिखारी के घाव ठीक हो गये। जब भिखारी जाने लगा, तो तेलिन ने कहा, "भाई! कहाँ जाओगे? यहीं पड़े रहो। कोल्हू चलाओ और खाना-कपड़ा तुम्हें मिलता ही रहेगा।" राजा वहीं रहने लगा।

इस बार तेलिन जब बाजार में तेल बेचने गई, तो उसे पहले से अधिक दाम मिले। उसने मन में सोचा, "यह भिखारी तो मेरा भाग्य बनकर आया है।" इसके बाद उसे हर रोज अधिक दाम मिलते। एक दिन उसने कहा "भाई! तुम तो बड़े भाग्यवान हो। जिस दिन से आए हो, मेरी तो चाँदी ही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चाँदी है।"

उसने कहा, "बहन ! तुम्हारी नीयत अच्छी है। तुम तेल में मिलावट नहीं करतीं, इसलिए तुम्हारा तेल अच्छे दामों बिकता है।"

एक दिन सारे राज्य में घोषणा की गई, "राजकुमारी का स्वयंवर दशमी के दिन होगा। उस दिन सब लोग चौगान में इकट्ठे हों। राजकुमारी स्वयं अपना वर चुनेगी।"

दशमी का दिन था। बड़े-बड़े बांके जवान सजधज कर चौगान में आने लगे। आकाश में हल्के-हल्के सफेद बादल छा गये। मौसम सुहावना हो गया। ठीक समय पर राजकुमारी अपने माता-पिता के साथ चौगान में आई। उसके हाथों में वरमाला थी। वह एक-एक युवक के पास जाती, कुछ देर रुकती, फिर चल पड़ती। राजकुमारी को कोई भी युवक पसंद न आया। एकाएक राजकुमारी को चक्कर आया और वह बेहोश होकर गिर पड़ी। चौगान में हाहाकार मच गया। राजवैद्य और हकीम बुलाए गए; परन्तु उनकी कोशिश बेकार गई।

विक्रमादित्य ने, जो भिखारी वेश में था, तेलिन से कहा, "मैं राजकुमारो को ठीक कर सकता हूँ।" इतना कहकर तेलिन के रोकते-रोकते भी वह आगे बढ़ गया। राजा असहाय बैठा हुआ था। उसने राजकुमारी को देखने की बड़े वेमन से आज्ञा दे दी। 5

भिखारी ने मल्हार राग छेड़ दिया। चारों ओर रिमझिम वर्षा होने लगी। राजकुमारी ने अँगड़ाई ली। थोड़ी ही देर बाद वह होश में आ गई। राजा ने भिखारी को वहुत पुरस्कार देना चाहा। परन्तु उसने कुछ न लिया। कहने लगा, "दुःखी को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सेवा करना मेरा धर्म है ।"

तब राजा ने राजकुमारी से कहा, "बेटी ! स्वयंवर का मुहूर्त टल रहा है । जल्दी से वर ढूँढकर उसके गले में वरमाला डाल दो ।"

राजकुमारी फिर आगे आई । अनेक अमीर-उमरावों और युवक कुमारों को देखकर आगे बढ़ गई ।

जहाँ तेलिन खड़ी थी, वहाँ जाकर राजकुमारी एकाएक रुक गयी । उसके पास खड़े भिखारी के गले में उसने वरमाला डाल दी । यह देख राजा और रानी बहुत क्रुद्ध हुए । लेकिन वे अब क्या कर सकते थे ?

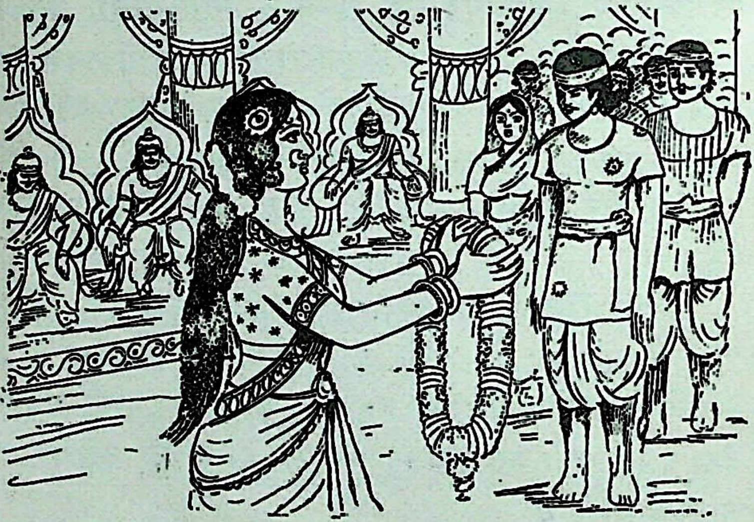

राजकुमारी पति को महल में ले आई । उनका स्नान कराके उसने रेशमी वस्त्र धारण कराए । फिर वह पति को लेकर दरबार की ओर चल पड़ी । राजा ने अपने पास ही एक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आसन पर जँवाई को और दूसरे पर राजकुमारी को बिठलाया।

इतने में दरबार में दो पुरुष और एक स्त्री लड़ते-झगड़ते आ पहुँचे। वे सभी अपने को बड़ा कह रहे थे।

राजा ने उनसे पूछा, "तुम कौन हो ? कहाँ से आए हो ? क्या चाहते हो ?"

उन्होंने उत्तर दिया, "हम धर्म, कर्म और होनी हैं। हममें कौन बड़ा है इसका निर्णय आपको करना है ?"

राजा ने बारी-बारी मंत्रियों से, पुरोहित से तथा सेनापति से पूछा; परन्तु कोई भी उत्तर न दे सका। तब राजकुमारी का पति उठ खड़ा हुआ। उसने पहले धर्म को बुलाकर पूछा, "युग-युगान्तर से तुम मनुष्य के मन में बस कर उसे सुखी बनाते आए हो, क्या तुम्हें विक्रमादित्य का पता है ?"

धर्म ने उत्तर दिया, "विक्रमादित्य जैसा धर्म-प्रिय दूसरा मनुष्य नहीं है।"

"फिर उन पर पड़ी मुसीबतों से तुमने उनको क्यों नहीं बचाया ?"

धर्म के मुँह से कोई शब्द न निकला। सिर झुकाकर वह पीछे हट गया।

तब कर्म आगे बढ़ा। राजकुमारी के पति ने पूछा, "क्या विक्रमादित्य से बढ़कर कर्मवीर इस संसार में है ?"

"नहीं।" कर्म ने उत्तर दिया।

"तब तुमने उसके अच्छे कर्मों का फल उसे क्यों नहीं दिया ?"

कर्म ने कोई उत्तर न दिया। सिर झुकाकर वह पीछे हट गया।

तब राजकुमारी के पति ने होनी को पुकारा। जब वह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सामने आई तो उसने कहा, "तूने विक्रमादित्य को मिट्टी में मिला दिया। प्रतापी महाराज से भिखारी बना दिया। जो होना था, सो हुआ। अब तो विक्रमादित्य को उसके धर्म, कर्म का पुरस्कार दे।"

होनी ने उत्तर दिया, "अरे! तुम्हीं तो महाराज विक्रमादित्य हो। जाओ, अपनी वधू को लेकर अपनी राजधानी लौट जाओ और पहले की तरह न्यायपूर्वक राज्य करो। मेरा चक्र पूरा हो गया।"

यह सुनकर राजा-रानी की प्रसन्नता की सीमा न रही। राज दरबार में खुशी की लहर दौड़ गई। राजकुमारी पति के पास आई। वह चरण छूने को झुकी। विक्रमादित्य ने उसे बीच ही में रोक लिया। दोनों के नयनों में खुशी के आँसू ढलक आए।

सबने स्वीकार किया कि होनी ही सबसे अधिक बलवान होती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

12

देश की प्रेरणा-शक्ति : इन्दिरा गांधी

जिस दिन महान क्रांतिकारी नेता लेनिन ने रूस में लाल क्रांति की घोषणा की थी उसी दिन 19 नवम्बर, 1917 में इलाहाबाद के आनन्द भवन में जिस बालिका ने जन्म लिया उसे श्रीमती सरोजिनी नायडू ने 'भारत की नई आत्मा' कहा था। दादा मोतीलाल नेहरू की अनुशासनप्रियता, पिता जवाहर लाल नेहरू की निर्भीकता और माता कमला नेहरू की संवेदनशीलता का उत्तराधिकार ग्रहण कर बालिका इन्दु प्रियदर्शिनी जीवन के रास्ते पर आगे बढ़ने लगी।

दिल्ली के किंडरगार्डन से इन्दु की शिक्षा शुरू हुई। बाद में इलाहाबाद में माडर्न स्कल तथा सेंट सिसिलया स्कूल में उनकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई। 1926 ई० में आगामी शिक्षा के लिए उन्होंने पिता के साथ स्विटज़रलैंड प्रस्थान किया। माता की लम्बी बीमारी और दादा एवं पिता द्वारा देश के स्वतन्त्रता-संग्राम में भाग लेने के कारण बार-बार जेल जाने से बालिका इन्दु के अध्ययन-क्रम में बाधा उत्पन्न होती रही। फिर भी उनकी व्यावहारिक शिक्षा उनके पिता द्वारा सम्पन्न हुई। पिता ने जेल से समय-समय पर जो पत्र अपनी पुत्री को लिखे वे निश्चय ही अमूल्य ज्ञान की निधि हैं। साथ ही परिवार के वातावरण का भी उनके हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा जिससे उन्होंने देश-सेवा का पाठ पढ़ा। तेरह वर्ष की अवस्था में उन्होंने 'वानर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सेना' नाम से बच्चों का संगठन बनाया और 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारे लगाकर विदेशी सरकार का विरोध किया। शिक्षा के सूत्र टूटकर जुड़ते और जुड़कर टूटते रहे। मैट्रिक करने के बाद महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा संचालित 'विश्व भारती' (शांति निकेतन) में प्रवेश लिया। बाद में उच्चतम शिक्षा के लिए आक्सफोर्ड के समरविले कालेज में प्रविष्ट हुईं।

इक्कीस वर्ष की आयु में वे भारत लौट आईं। देश में उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू कर दिया। उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर ली। 26 मार्च, 1942 को फीरोज गांधी के साथ विवाह-सूत्र में बँध जाने पर इन्दु प्रियदर्शिनी इन्दिरा गांधी बन गईं। 'भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण दम्पत्ति को 13 मास का कारावास भोगना पड़ा। 1944 से 1946 ई० के गृहस्थ जीवन में उन्हें दो पुत्र-रत्न राजीव और संजय प्राप्त हुए।

पन्द्रह अगस्त 1947 को देश में स्वाधीनता-सूर्य उदय हुआ और प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में पं० जवाहर लाल नेहरू ने देश के शासन का संचालन किया। पिता के मुख्य सहायक के रूप में इन्दिरा जी ने मन्त्रिमण्डल में कोई पदग्रहण किए बिना अपनी जिम्मेदारी निभाई। पिता के साथ ही उन्होंने देश-विदेश का भ्रमण किया जिससे उन्हें अंतर्राष्ट्रीय विषयों का ज्ञान प्राप्त हुआ। परिवार के वातावरण से उन्हें राजनीति की शिक्षा मिली। 1957 ई० में इन्दिरा जी अखिल भारतीय कांग्रेस की कार्यकारिणी की सदस्य बनीं और 1959 में कांग्रेस अध्यक्ष के गौरवमय पद पर निर्वाचित हुईं। इस उत्तरदायित्व का कुशलतापूर्वक निर्वाह कर उन्होंने अपनी सूझबूझ का परिचय दिया। 1960 ई० में पति का निधन और 1964 ई० में पिता के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वर्ग सिधार जाने पर उनके हृदय पर गहरा आघात हुआ।

श्री जवाहर लाल नेहरू के बाद देश की बागडोर लालबहादुर शास्त्री के कुशल हाथों में आई। श्रीमती इन्दिरा गांधी को इस

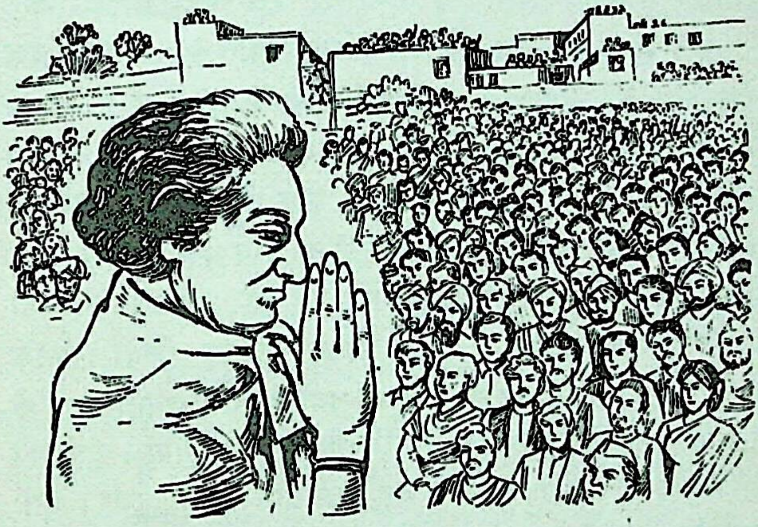

समय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय का भार सौंपा गया। किन्तु श्री लालबहादुर का असामयिक निधन हो जाने पर देश पर संकट के बादल छा गए। इस अवसर पर श्रीमती इन्दिरा गांधी को प्रधानमन्त्री बनाया गया। प्रधानमन्त्री बनने के कुछ ही समय के अन्दर बैंकों का राष्ट्रीयकरण करके और प्रिवीपर्स पर रोक लगाकर साहसपूर्ण क्रांतिकारी कदम उठाए।

सन् 1971 में पाकिस्तान को युद्ध में परास्त कर प्रधानमंत्री श्रीमती गांधी ने देश के गौरव को बढ़ाया। बंगला देश के निर्माण का श्रेय भी इन्दिरा जी को ही जाता है। सोवियत संघ के साथ दीर्घकालीन मैत्री संधि करके उन्होंने अपनी सूझबूझ का परिचय दिया। तृतीय एशियाई अन्तराष्ट्रीय व्यापार मेले का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिल्ली में आयोजन कर भारत को समृद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ाने का यत्न किया। इसी समय पोकरण (राजस्थान) में सफल अणु परीक्षण हुआ इससे भारत की अणु शक्ति के विकास का प्रमाण मिला।

जून 1976 में देश की आन्तरिक स्थिति को बिगड़ता देख आपात्काल की घोषणा कर दी गई। मार्च 1977 के लोकसभा चुनावों के साथ आपात स्थिति का अन्त हुआ। इन चुनावों में कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ा। पहली बार काँग्रेस-विरोधी दलों ने मिलकर जनता पार्टी के नाम से शासन का सूत्र अपने हाथ में लिया। इन्दिराजी के लिए यह परीक्षा की घड़ी थी, किन्तु उन्होंने धैर्य के साथ इसका सामना किया। उनके विरुद्ध शाह कमीशन का गठन किया गया। परन्तु जनता पार्टी के विभिन्न घटकों में पारस्परिक विरोध शुरू हो गया। कुर्सी की इस लड़ाई में जनता सरकार का नाटकीय अन्त हुआ। अतः राष्ट्रपति ने लोकसभा भंग करके मध्यावधि चुनाव की घोषणा कर दी।

जनवरी 1980 में निर्वाचन हुए और जनता ने पुनः इन्दिराजी को प्रधानमन्त्री चुनकर उनके दूरदर्शी नेतृत्व में अपना विश्वास व्यक्त किया। 14 जनवरी को श्रीमती गांधी एक बार फिर प्रधानमंत्री पद पर आसीन हुईं। 23 जून, 1980 को भाग्य ने उनके जीवन पर एक और करारी चोट की। उनका प्रिय पुत्र संजय, जो राजनीतिक क्षितिज का एक उद्दीयमान नक्षत्र था, उनसे सदा के लिए विदा लेकर परलोक सिधार गया। इस आघात को माँ ने बड़े धैर्य के साथ सहन किया।

अपने प्रधानमंत्रित्व के इस दौर में श्रीमती गांधी ने कई महत्वपूर्ण कार्य किए। दिल्ली में नवम् एशियाड

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(एशियाई राष्ट्रों की खेल प्रतियोगिता) का आयोजन किया गया। गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों का सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलन में 101 राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्षों ने भाग लिया। राष्ट्रपति ने उनके महान कार्यों की स्वीकृति हेतु उन्हें 'भारत रत्न' की महिमापूर्ण उपाधि प्रदान की। एक विश्व नेता के रूप में श्रीमती इन्दिरा गांधी का ओजस्वी रूप प्रकट हुआ। सोवियत अंतरिक्ष यात्रियों के साथ भारत के नागरिक राकेश शर्मा ने अंतरिक्ष में प्रवेश किया। इन सबका श्रेय श्रीमती गांधी के नेतृत्व को ही दिया जाता है।

अन्तिम समय तक उन्होंने सम्प्रदायवाद, जातिवाद और वर्गवाद का विरोध किया। अपने रक्त की अन्तिम बूँद भी वे देश की सेवा में अर्पित कर देना चाहती थीं। 31 अक्तूवर, 1984 को उन्हीं के दो अंगरक्षकों ने 16 गोलियों से उनके भौतिक शरीर का अन्त कर दिया। किन्तु इन्दिरा गांधी की प्रेरणा भारत की अखण्डता के लिए सदा ज्योतिपुञ्ज बनकर राह दिखाएगी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

13

धर्मबुद्धि और पापबुद्धि

किसी नगर में धर्मबुद्धि और पापबुद्धि नाम के दो मित्र रहते थे। एक दिन पापबुद्धि ने विचार किया, "मैं मूर्ख और निर्धन हूँ। धर्मबुद्धि चतुर और बुद्धिमान है। इसकी सहायता से धन एकत्र कर मैं भी क्यों न सुख पाऊँ।" इसलिए एक दिन धर्मबुद्धि के पास जाकर पापबुद्धि ने अपना विचार प्रकट किया, "मित्र, क्यों न हम दोनों कहीं परदेश में जाकर धन कमाएँ। निर्धनता में जीवन बिताना अच्छा नहीं।" धर्मबुद्धि उससे सहमत हो गया और दोनों मित्र गुरुजनों की अनुमति लेकर घर से निकल पड़े।

पुष्पपुर जाकर दोनों ने परिश्रम करके कुछ ही समय में पर्याप्त धन इकट्ठा कर लिया। अब दोनों मित्र उत्साहपूर्वक घर की ओर चल पड़े। जब दोनों अपने नगर के समीप पहुँचे तो पापबुद्धि के मन में कपट जागा। उसने सोचा, क्यों न ऐसा उपाय करूँ कि धर्मबुद्धि का धन भी मुझे मिल जाय। अन्त में उसे एक युक्ति सूझी और उसने अपने मित्र से कहा, "बन्धु ! यह सारा धन घर ले जाना उचित नहीं, क्योंकि धन देखकर कुटुम्बी तथा बन्धु-बान्धव माँगने लगेंगे। अधिक धन होने पर व्यय भी अधिक होगा। इसलिए अधिकांश धन नगर से बाहर यहीं किसी वृक्ष के नीचे जमीन में गाड़ देते हैं। इस समय थोड़ा-सा धन साथ लेकर घर चलते हैं। जब यह समाप्त हो जाएगा तो आवश्यकता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नुसार फिर यहाँ आकर और धन ले जाएँगे। बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि अपना थोड़ा भी धन किसी को न दिखलाए; क्योंकि धन चीज ही ऐसी है कि उसे देखकर मुनियों का मन भी चंचल हो जाता है। जैसे मांस को जल में मछलियाँ, जमीन पर सिंह आदि हिंसक जीव तथा आकाश में गिद्ध आदि पक्षी खाने के लिए दौड़ते हैं, वैसे ही धन को देखकर अपने-पराये, शत्रु-मित्र सभी हड़पने के लिए दौड़े आते हैं।"

यह बात सुनकर धर्मबुद्धि ने उसकी बात का समर्थन करते हुए कहा, "मित्र! तुमने उचित ही कहा है। यही करो।"

इसके बाद उन्होंने एक पेड़ के नीचे गढ़ा खोदा और सारा धन जमीन में गाड़ दिया। फिर गढ़े को अच्छी तरह मिट्टी से

भरकर वे अपने-अपने घर चले गए। घर वालों को खुश करने के लिए थोड़ा-सा धन उन्होंने साथ ले लिया था।

एक रात मौका देखकर पापबुद्धि ने वह सारा धन निकाल लिया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुछ दिन बाद पापबुद्धि आकर धर्मबुद्धि से कहने लगा, "मित्र क्या करें—हमारा बहुत बड़ा कुटुम्ब है। उस का पता ही नहीं चला, सारा खर्च हो गया। चलो थोड़ा-थोड़ा धन और निकालकर लाएँ।"

धर्मबुद्धि ने कहा, "अच्छा मित्र चलो, ऐसा ही करते हैं।"

दोनों वहाँ गए जहाँ उन्होंने धन गाड़ा था। पर जब उन्होंने जमीन को खोदा, तो उसमें से खाली बर्तन निकला—एक पैसा भी उसमें न था।

पापबुद्धि सिर पीटकर कहने लगा, "हाय पापी! तूने ही सारा धन निकाल लिया; क्योंकि तुम्हारे सिवाय अन्य किसी को नहीं पता था कि यहाँ धन गाड़ा गया है। ला, मेरे भाग का आधा धन दे दे; नहीं तो पुलिस में रपट लिखवाता हूँ।"

धर्मबुद्धि ने जल-भुनकर कहा "अरे दुष्ट! मैं तो धर्मबुद्धि हूँ। आज तक मैंने किसी का एक पैसा भी छल-कपट या चोरी से नहीं लिया। मैं तो पराई स्त्रियों को माता के समान, पराये धन को मिट्टी के ढेले के समान तथा सब मनुष्यों को अपने समान समझता हूँ। तू मुझ पर मिथ्या लांछन लगा रहा है। मुझे तो लगता है—सारा धन तुम्हीं ने निकाल लिया है। उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।"

दोनों झगड़ते-झगड़ते न्यायालय में पहुँचे। न्यायाधीश के सामने दोनों एक-दूसरे को दोष देने लगे। पापबुद्धि ने जब बढ़-चढ़कर धर्मबुद्धि पर दोषारोपण किया तो न्यायाधीश ने पूछा, "क्या तुम्हारा कोई गवाह है?"

पापबुद्धि झट बोला, "हाँ, वृक्ष का देवता मेरा साक्षी है। उसी से आप पूछ लीजिए। उसी वृक्ष के नीचे हमने धन गाड़ा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

था। वृक्ष-देवता बता देगा कि हममें से कौन चोर है और कौन साधु।"

न्यायाधीश ने आश्चर्य से कहा, "क्या कहा? वृक्ष-देवता! हमें बहुत कौतूहल हो रहा है। क्या वृक्ष देवता बोलेगा? तुम पुलिस के साथ अभी अपने-अपने घर जा सकते हो। दोपहर बाद तुम वहाँ पहुँच जाना।"

पुलिस के पहरे में दोनों अपने-अपने घर गए। पापबुद्धि जब घर में गया, तो अपने पिता को एक तरफ ले जाकर कहने लगा, "पिताजी! बहुत भारी धन का मामला है। सारा धन मैंने चुराया है। वह तभी हजम हो सकता है जब कि आप मदद करें। नहीं तो सारा धन भी चला जाएगा और साथ ही आपके पुत्र के प्राणों पर भी आ बनेगी।"

पिता ने कहा, "प्रिय पुत्र! शीघ्र बताओ? मुझे क्या करना चाहिए, जिससे सारा धन भी बच जाए और तुम्हारा सम्मान भी।" 3

पापबुद्धि ने कहा, "उस जंगल में शमी का एक बहुत बड़ा पेड़ है। वह बीच में से खोखला है। आप तुरन्त जाकर उस खोखले में छिप जाइए। जब न्यायाधीश के साथ मैं और धर्मबुद्धि आएँ तो तुम चुपचाप छिपे रहना। मैं न्यायाधीश के आदेश से तुम्हें शपथ दिलाकर सत्य कहने के लिए कहूँगा, तो वन देवता की ओर से तुम कहना कि धर्मबुद्धि चोर है—उसी ने धन चुराया है।"

पुत्र की बात सुनकर पिता जल्दी से वन की ओर चल पड़ा। वह किसी तरह पेड़ के खोखल में घुस गया।

जब धर्मबुद्धि और पापबुद्धि न्यायाधीश तथा पुलिस वालों के साथ वहाँ आए, तो शमी के वृक्ष के समीप जाकर पापबुद्धि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ने कहा, "हे भगवान् वन-देवता ! कृपया बताइए—हम दोनों में से कौन चोर है ? क्योंकि आप सब कुछ जानते हैं।"

तभी शमी वृक्ष की खोखल में छिपा हुआ पापबुद्धि का पिता बोला, "धर्मबुद्धि ही चोर है—सारा धन उसी ने चुराया है।"

यह सुनकर न्यायाधीश तथा पुलिस वाले सभी आश्चर्य-चकित रह गए। न्यायाधीश कानून की पुस्तक खोलकर देखने लगे कि अपराधी को क्या दण्ड दिया जाए और पुलिस वाले हथकड़ियाँ तैयार करने लगे कि एकाएक धर्मबुद्धि उस शमी वृक्ष की ओर दौड़ पड़ा। उसने फुर्ती से सूखे पत्ते, सूखी टहनियाँ आदि पेड़ के चारों ओर इकट्ठे करके आग लगा दी। भक्-भक् करके आग जल पड़ी और जल्दी ही हू-हू करके प्रचण्ड हो गई। इतने में शमी वृक्ष के कोटर में से, अधजले शरीर वाला, हाय-हाय करता हुआ एक आदमी बाहर निकला। तब पुलिस-वालों ने उसे घेर लिया और पूछा, "यह क्या ? यह क्या ? तुम कौन हो।" उसने रोते हुए अपने दुष्ट पुत्र पापबुद्धि की सारी करतूत सुना दी। अब सचाई सबको प्रकट हो गई।

तब न्यायाधीश की आज्ञा से पुलिसवालों ने पापबुद्धि के हथकड़ी पहना दी। न्यायाधीश ने धर्मबुद्धि की ईमानदारी तथा बुद्धिमत्ता की बहुत प्रशंसा की। पापबुद्धि के घर से उसके भाग का धन दिलवाया गया और पापबुद्धि को बन्दीगृह में भेज दिया गया।

इस प्रकार दुष्ट पापबुद्धि ने अपने किए का फल पाया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

14

रबिया

बारह सौ बरस पहले तुर्किस्तान के बसरा नामक नगर में रबिया का जन्म हुआ। वह अपने माता-पिता की चौथी कन्या थी। रबिया की माँ तो उसके बचपन में ही चल बसी थी। जब वह बारह बरस की हुई, तो उसके पिता की भी मृत्यु हो गई। अब रबिया का जीवन बहुत ही कष्ट में बीतने लगा।

इन्हीं दिनों देश में भीषण अकाल पड़ा। रबिया का बहनों से भी साथ छूट गया। किसी दुष्ट ने धोखे से फुसलाकर रबिया को एक धनी के हाथ बेच दिया। वह धनी बहुत ही स्वार्थी और निर्दयी था। वह रबिया को पैसे से खरीदी होने के कारण गुलाम समझता था और हर समय उससे कोई न कोई काम करवाता रहता था। रबिया अगर पल भर भी आराम करने लगती तो वह और काम कह देता था। बात-बात में गाली-गलौज और मारपीट मामूली बात हो गई थी। जब भी एकान्त मिलता; रबिया रो-रोकर अपना दुखड़ा खुदा को सुनाया करती थी। वह कहती थी, "या रब ! मैं अनाथ हूँ, पर तू तो अनाथों का नाथ है। तेरे सिवा मेरा कौन सहारा है ?"

मालिक के अत्याचारों से तंग आकर एक दिन रबिया छिपकर भाग निकली; परन्तु रास्ते में वह ठोकर खाकर गिर पड़ी, जिससे उसका दायाँ हाथ टूट गया। मुसीबत पर यह नई मुसीबत आ गई। रबिया ने कहा, "या खुदा ! जैसी तेरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मर्जी।" उसे सपना आया, मानो भगवान उससे कह रहे हैं, "बेटी, चिन्ता न कर। तेरे कष्ट जल्दी दूर हो जाएँगे। लोग तेरा आदर करेंगे।' नींद खुलने पर रबिया को हँसी आ गई। उसे अब पूरी उम्मीद और हिम्मत हो गई। वह हाथ की पीड़ा को भूलकर मालिक के घर लौट गई।

उस दिन से रबिया का जीवन बदल गया। कामकाज करते समय भी वह खुदा का ध्यान करती रहती। काम से उसे अब थकावट ही न होती थी। कई बार वह रात जागकर प्रार्थना करती रहती। इससे उसका तेज बढ़ने लगा। एक दिन आधी रात के समय रबिया एकान्त कोठरी में घुटने टेककर बैठी करुण

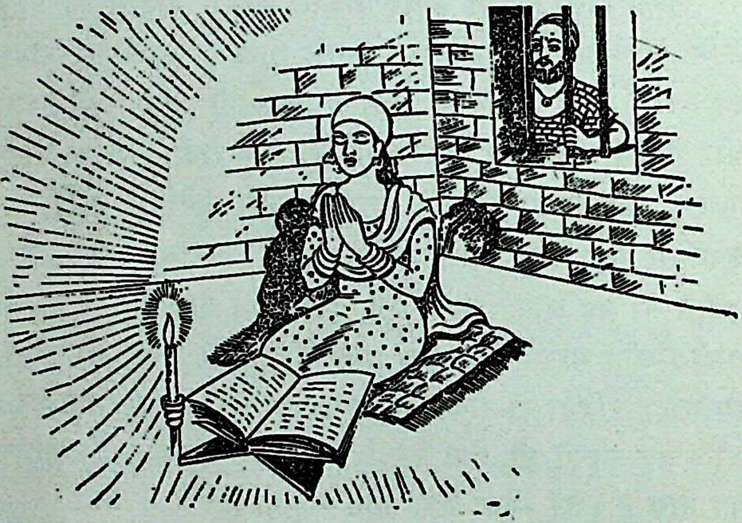

स्वर से प्रार्थना कर रही थी। अचानक उसी समय उसके मालिक की नींद खुल गई। मीठी आवाज़ में प्रार्थना सुनकर वह रबिया की कोठरी की तरफ गया। खिड़की से उसने देखा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कि रबिया की कोठरी में गजब का प्रकाश फैला हुआ था। रबिया कह रही थी, "ऐ मेरे मालिक ! अब मैं सिर्फ तेरा ही हुकम मानना चाहती हूँ, लेकिन क्या करूं, जितना चाहती हूँ, उतना हो नहीं पाता। मैं खरीदी हुई गुलाम हूँ। मुझे गुलामी से फुर्सत कहाँ मिलती है ?"

यह सुनकर मालिक का मन पिघल गया। वह धीरे-धीरे रबिया के पास गया। उसने देखा, रबिया के मुख पर दिव्य ज्योति छाई हुई है। वह भय और आश्चर्य में डूब गया। उसने सोचा, "ऐसी पवित्र और पूजनीय देवी को गुलामी में रखकर मैंने बड़ा अन्याय और पाप किया है। ऐसी खुदा की इबादत करने वाली की सेवा तो मुझे करनी चाहिए।" उसने रबिया से कहा, "बहन ! मैं अब तक तुझे पहचान नहीं सका था। आज मेरी आँखें खुल गई हैं। अब तुझे सेवा नहीं करनी पड़ेगी। तू मेरे घर में सुख से रह। मैं ही तेरी सेवा करूँगा।"

रबिया ने कहा, "मालिक ! मैं आपसे सेवा नहीं करवाना चाहती। आपने इतने दिन मुझे घर में रखकर खाने-पहनने को दिया, यही मुझ पर बड़ा उपकार है। अब मुझे आप दूसरी जगह जाने की आज़ादी दे दें।"

मालिक ने रबिया की बात मान ली। रबिया को गुलामी से छुटकारा मिल गया। वह एक एकान्त स्थान में झोंपड़ी बनाकर रहने लगी। अब उसका अधिक समय ईश्वर की भक्ति में ही बीतता था। लोग दूर-दूर से उसका दर्शन करने आते और उसके दर्शन करने में सवाब (पुण्य) मानते थे।

एक बार रबिया उदास बैठी हुई थी। दर्शन के लिए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आने वाले लोगों में से किसी ने पूछा, "आज आप उदास क्यों हैं ?"

रबिया ने उत्तर दिया, "आज मेरा मन बहिश्त (स्वर्ग) की ओर चला गया था। इसके लिए मेरी रूह (आत्मा) ने मुझे फटकारा है। यही कारण है कि मैं उदास हूँ। मेरे मन में साईं बसता है, उसे छोड़कर मेरा पाजी मन दूसरी ओर क्यों गया ?

एक बार रबिया बहुत बीमार हो गई। सूफियान नाम का फकीर जो बहुत पहुँचा हुआ (ज्ञानी) माना जाता था, रबिया से मिलने आया। रबिया की बीमारी की हालत देखकर सूफियान को बहुत दुःख हुआ। परन्तु वह संकोच के कारण कुछ भी न कह सका। तब उससे रबिया ने कहा, "भाई, तुम कुछ कहना चाहते हो, तो कहो।"

सूफियान ने कहा, "देवि ! आप प्रभु से प्रार्थना कीजिए। प्रभु आपकी बीमारी जरूर मिटा देंगे।"

रबिया ने मुस्कराते हुए कहा, "सूफियान ! क्या तुम इस बात को नहीं जानते कि बीमारी किसके इशारे से हुई है ?"

यह सुनकर सूफियान लज्जित हो गया। फिर सूफियान ने पूछा, "क्या आपको किसी चीज़ के खाने की इच्छा है।"

रबिया ने कहा, "तुम जानते हो, मैं खजूर खाना चाहती थी। दस वर्ष से यहाँ रहती हूँ। खजूरों की भी यहाँ कमी नहीं है; परन्तु मैंने अभी तक एक भी खजूर जीभ पर नहीं रखी। मेरी दुनियावी इच्छा मिट गई है, उससे लौ लगाई है जिसने ज़हान (संसार) बनाया है।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक बार संत हुसैन बसरी ने रबिया से पूछा, "क्या आप शादी करना चाहती हैं ?"

रबिया ने जवाब दिया, "शादी शरीर से होती है, परन्तु मेरे पास शरीर कहाँ है ?" मैं तो मन के साथ ही शरीर भी उस मालिक के हवाले कर चुकी हूँ। उसकी इच्छा ही मेरी इच्छा है।"

हुसैन बसरी ने पूछा, "देवि ! आपने ऐसी ऊँची स्थिति किस तरह पाई ?"

रबिया ने उत्तर दिया, "जो कुछ मेरे पास था, उसे खोकर ही मैंने यह स्थिति पाई है।"

एक दिन एक आदमी ने रबिया से पूछा, "आप पाप रूपी राक्षस को तो अपना दुश्मन समझती हैं न ?"

रबिया ने कहा, "ईश्वर के प्रेम में लगी रहने के कारण मुझे न किसी से दुश्मनी करनी पड़ती है, न लड़ना पड़ता है। मेरे लिए तो मालिक के ही सब बन्दे हैं।"

एक बार कुछ लोग रबिया के पास गए। रबिया ने उनमें से एक से पूछा, "भाई ! तू खुदा की इबादत किस लिए करता है ?" उसने जवाब दिया, "दोज़ख (नरक) की भयानक पीड़ा से बचने के लिए।" तब रबिया ने दूसरे से पूछा। उसने कहा, "बहिश्त (स्वर्ग) बहुत ही सुन्दर है। वहाँ तरह-तरह के भोग, सुख और आराम हैं। उन्हें ही पाने के लिए मैं इबादत करता हूँ।"

रबिया ने कहा, "बेसमझ लोग ही डर या लालच से इबादत (उपासना) करते हैं। न करने से तो यह भी अच्छी है; परन्तु मान लो स्वर्ग-नरक (बहिश्त-दोज़ख) न होते तो क्या तुम मालिक की बन्दगी ही न करते ? सच्ची बन्दगी वही है जो डर या लालच के बिना की जाती है।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रबिया का बाकी जीवन बहुत ऊँची अवस्था में बीता। वह अपने चारों तरफ मालिक का जलाल (सौन्दर्य) देखती और सदा आनन्द में मग्न रहती थी। लोग उसका बहुत आदर करते थे और दूर-दूर से लोग उसके दर्शन करने तथा ज्ञान प्राप्त करने आते थे।

हिजरी साल 15 में रबिया ने नश्वर शरीर त्याग दिया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

15

दयालु मिथिलेश

कैसा भयंकर स्थान है ! कहीं लार, पीप और लहू का कुण्ड है, कहीं अन्तड़ियों का ढेर ! किसी के अंग कट रहे हैं, कोई जलाया जा रहा है। दुःखी जीवों के सिवाय और जितने दिखाई देते हैं, सबकी आँखें लाल हैं, मानो साक्षात् क्रोध की मूर्ति हैं, किसी में दया का नाम नहीं। सबके शरीर भयानक हैं, और आकार देखकर कँपकँपी छूटती है ! मारने, काटने और रोने-चिल्लाने के सिवा कोई आवाज़ ही सुनाई नहीं पड़ती। गरम-गरम लू शरीर को भून रही है और कांटों से लदे पेड़ आँखों में शूलों के समान चुभते हैं।"

देखते-ही-देखते पलमात्र में हवा बदल गई। शीतल-मन्द सुगन्धित वायु चलने लगी। दुखियों की पीड़ा कम होने लगी। हाहाकार बन्द हो गया। शस्त्र चलने रुक गए। अकस्मात् परिवर्तन से सभी चकित थे। यह क्या हुआ, कैसे हुआ, क्यों हुआ—यह जानने के लिए सभी एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे।

इतने में अचानक दो दिव्य पुरुष आते दिखाई दिए। उनकी वेशभूषा और चाल-ढाल से प्रतीत होता था कि उनमें एक तो महाराज हैं और दूसरा देवदूत है। देवदूत ने कहा—"इधर महाराज ! इधर पधारिए।"

इधर-उधर अचरज भरी दृष्टि से देखते हुए महाराज ने कहा, "हैं ! यह क्या ? देवदूत ! तुम हमें कहाँ ले आए हो ?"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बड़ी गंभीरता से देवदूत ने उत्तर दिया, "महाराज, नरक में।"

महाराज के सिर पर मानों बिजली गिरी। उन्होंने उत्तेजित होकर क्रोध से काँपते-काँपते कहा, "ओह! दयालु महाराज मिथिलेश को नरक! जिसका विदेह वंश में जन्म हुआ, उसको नरक! जिसने अनेक यज्ञ किए, दान किए, धर्मपूर्वक और न्यायपूर्वक प्रजा का पालन किया, उसको नरक! संग्राम के समय शत्रुओं को और दान के समय अतिथियों को जिसने कभी पीठ नहीं दिखलाई, उसको नरक!"

नम्रता और निर्भयतापूर्वक देवदूत ने कहा, "हाँ महाराज! उसे भी नरक!"

महाराज ने क्रुद्ध स्वर में कहा, "तो क्या शास्त्र सब मिथ्या हैं? नहीं, नहीं। यह कैसे हो सकता है? देवदूत, मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रहा। क्या रहस्य है?"

देवदूत ने कहा, "महाराज, घबराइए नहीं, पहले आप नरक में आने का कारण समझ लीजिए। आपका कथन सत्य है। आप सचमुच धर्मात्मा और महात्मा हैं। न तो आपके द्वार से पितरों को निराशा लौटना पड़ा, न अतिथियों को और याचकों को। प्रजापालक! आपने शत्रुओं का नाम तो पुस्तकों में ही छोड़ा है। परन्तु सर्वथा निर्दोष तो भगवान् ही हैं— वे ही सर्वज्ञ हैं। आप से ही एक पाप हुआ है?"

देवदूत की बात सुनकर आश्चर्य से मिथिलेश ने पूछा, "देवदूत! बताते क्यों नहीं, वह कौन-सा पाप है?"

देवदूत ने उत्तर दिया, "महाराज पाप का फल अवश्य भोगना पड़ता है। जैसे जल द्वारा सींचने से और देश-काल आदि के अनुसार बीज में आप से आप अंकुर निकल आते हैं,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वैसे ही पाप-पुण्य भी समय आने पर अपना फल प्रकट करते हैं। आपने भी एक छोटा-सा पाप किया है, जिसके फलस्वरूप आपको नरक में आना पड़ा।"

देखिए, नरक का कैसा भीषण दृश्य है ! ये लंबी चोंच वाले काग उन पापियों का पेट फाड़ रहे हैं, जो कृतघ्न रहे, जिनमें कृतज्ञता का नाम भी नहीं रहा। इन दुष्टों ने जिनका सहारा लिया, उन्हीं की जड़ काटने का प्रयत्न किया। जिसका खाया उसी की निन्दा की।

मिथिलेश ने पूछा, "अच्छा, तो यह कुत्ते की तरह कौन चिल्ला रहा है ?"

देवदूत ने उत्तर दिया, "वह जो ताड़ना से कुत्तें की तरह चिल्ला रहा है और जिसकी बाईं आँख निकाली जा चुकी है, यह वह पुरुष है जो सबको बुरी दृष्टि से देखा करता था।

मिथिलेश—"ये कौन हैं जो कड़ाह में डालकर औटाए जा रहे हैं ?"

देवदूत—"ये वे लोग हैं जिन्होंने धर्म छोड़कर अधर्म का मार्ग अपनाया। कभी किसी पर दया नहीं की और सबको ठगा।"

मिथिलेश—"ये लोहे के तपे हुए खम्भे के साथ कौन बाँधे गये हैं ?"

देवदूत—"ये वे लोग हैं जिन्होंने पराई स्त्रियों की ओर बुरी दृष्टि से देखा।"

मिथिलेश—"और ये जिनकी जीभें निकाली जा रही हैं !"

देवदूत—"ये हैं वे मनुष्य जो सदा असत्य बोलकर दूसरों को ठगते रहे या फिर निन्दा-चुगली या झूठी प्रशंसा करके एक को दूसरे से लड़ाते रहे।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिथिलेश—"और ये जो लोह-दण्ड से पिटते हुए रो-चिल्ला रहे हैं…"

देवदूत—"ये उग्र पापी हैं। इन्होंने धर्म स्थानों को भ्रष्ट किया, मंदिरों का चन्दा पचाया, गरीबों और पीड़ितों की सहायता के लिए इकट्ठा किया धन मौज-मजे में उड़ाया…"

मिथिलेश—"ये दुर्गन्ध के कुण्ड में पड़े कौन तड़प रहे हैं ?"

देवदूत—"ये हैं हत्यारे, जिन्होंने स्वार्थवश अपनी इच्छा से या दूसरों के कहने पर हत्याएँ कीं, वे पुरुष भी इन्हीं कुण्डों में हैं जिन्होंने दान-दहेज कम मिलने पर पत्नी को सताया या उसकी हत्या कर दी।"

दुखियों के दुःख को देखकर दयालु मिथिलेश द्रवित हो उठे। देवदूत ने कहा, "महाराज इस समय आप जिस जगह हैं, वहाँ सब पापी ही पापी हैं या उनको दण्ड देने वाले हैं। चलिए यहाँ से निकल चलिए। जितना आपका पाप था, उतना फल आप को मिल चुका।"

"बहुत अच्छा" कहकर महाराज ने अभी मुँह फेरा ही था कि नरक में पड़े, दण्ड से तड़पते प्राणियों ने पुकार कर कहा, "महाराज ! थोड़ी देर और ठहर जाइए। आपके पवित्र दर्शनों से हमारे मन को शान्ति मिलती है। नरक की पीड़ा भी कम होती प्रतीत होती है। आप पुण्यात्मा हैं, आपके शरीर का स्पर्श करके आती हुई हवा से हमारे अंगों की ज्वाला शान्त होती है।"

महाराज मिथिलेश रुक गए। उन्हें यह जानने की उत्कण्ठा हुई कि उनके ठहरने से पापियों का मन क्यों शान्त होता है और क्यों उनकी यातना कम होती है। उन्होंने देवदूत से यही प्रश्न किया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देवदूत ने उत्तर दिया, "राजन् ! आपने अनेक यज्ञ किए हैं, जीवन-भर दान, तप, तीर्थ-यात्रा आदि पुण्य कर्म किए हैं। मनुष्यों पर ही नहीं, पशु-पक्षियों और जीव-जन्तुओं पर भी दया करने के कारण आप 'दयालु मिथिलेश' कहलाए हैं। जैसे जल की शीतलता अग्नि के ताप को दूर करती है, उसी प्रकार पुण्यात्मा का सत्संग पाप के ताप को मिटाता है।"

मिथिलेश ने कहा, "अहा ! दु:खी लोगों के दुःख दूर करने में जो सुख मिलता है, वह स्वर्ग में भी कहाँ होगा ? यदि मेरे यहाँ रहने से पीड़ितों की पीड़ा कम होती है, तो हे देवदूत ! मैं अपने दुःख की परवाह न करके यहीं रहने को तैयार हूँ।"

देवदूत ने कहा, "राजन् ! चलिए, इनको अपने पापों का फल भोगने दीजिए। और आप स्वर्ग में चलकर अपने पुण्य-कर्मों के फलस्वरूप सुख और आनन्द प्राप्त कीजिए।"

मिथिलेश ने बेचैन होकर कहा, "बस, बस देवदूत ! अधिक कहने-सुनने की कोई आवश्यकता नहीं। मेरे लिए आनन्द वहीं है जहाँ रहकर मैं दुःखी लोगों के दुःख दूर कर सकूँ। ये लोगें मुझे यहाँ ठहरने के लिए कह रहे हैं। उस मनुष्य को धिक्कार है, जो शरण में आए दीन-दुःखी की सहायता न करके अपने सुख और आनन्द की कामना करता है। जिसका मन दीन-दुखियों की 'हाय' सुनकर पिघलता—उसके यज्ञ, दान, तप, तीर्थ-यात्रा आदि सत्कर्म व्यर्थ हो जाते हैं। जो मनुष्य बाल, वृद्ध, रोगी और दुःखी की आह सुनकर सहायता नहीं करता, वह मनुष्य नहीं बल्कि राक्षस है। इन दुखियों के पास रहकर यदि मुझे ताप, दुर्गन्ध, भूख, प्यास आदि कष्ट भी सहने पड़ें, तो भी इनकी यथाशक्ति सहायता करना मेरा धर्म है। देवदूत ! तुम अब जा सकते हो। मुझे यहीं रहकर इनकी सेवा करने दो।" इतना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कहकर दयालु मिथिलेश वहीं खड़े हो गए। पीड़ित जनों की दशा देखकर उनके नेत्रों में जल भर आया।

देवदूत ने कहा, "राजन्! देखिए आपको स्वर्ग में लिवा ले जाने के लिए स्वयं इन्द्र और धर्मराज आए हैं।"

मिथिलेश ने दोनों को हाथ जोड़ और सिर झुकाकर प्रणाम किया। इन्द्र और धर्मराज ने उन्हें आशीर्वाद दिया—"कल्याण हो, कल्याण हो।"

फिर धर्म ने कहा, "चलिए महाराज, विमान तैयार है। हम आपको लेने आए हैं।"

मिथिलेश ने कहा—"यहाँ नरक में सहस्रों जीव घोर कष्ट उठा रहे हैं। दुःखी होकर ये त्राहि-त्राहि पुकार रहे हैं, मैं इनको छोड़कर नहीं जाऊँगा।"

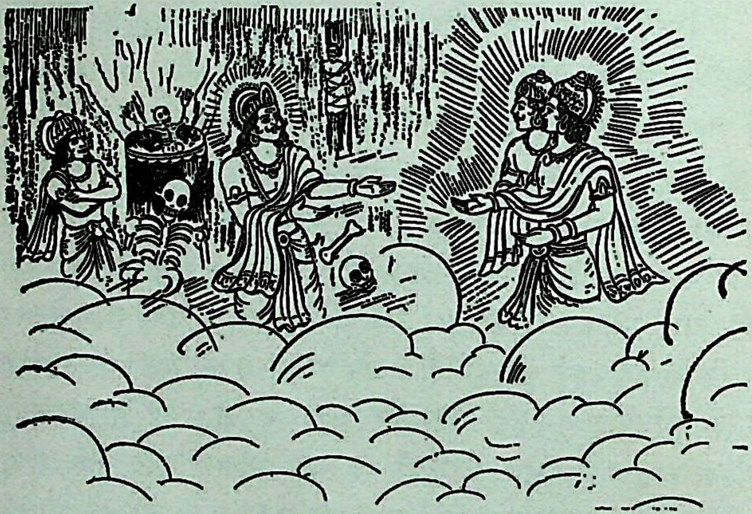

इन्द्र ने कहा, "इन पापियों का और आपका क्या संबंध? पापियों को नरक की प्राप्ति पाप-कर्मों से हुई है और आपको

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुण्य-कर्मों के फल से स्वर्गलोक जाना है ।"

मिथिलेश ने कहा, "आप दोनों देवता यदि मेरे पुण्य-कर्मों की संख्या जानते हों, तो कहिए ।"

धर्म ने उत्तर दिया, "मिथिलेश ! यत्न करने पर समुद्र के जल-बिन्दु और आकाश के तारे भले ही कोई गिन सके; परन्तु आपके पुण्य-कर्मों को गिनकर उनकी संख्या बताना संभव नहीं। विशेषतः इन लोगों पर दया करने से आपके पुण्यों की संख्या में और भी वृद्धि हो गई है । अतः अब चलिए और इन्हें यहीं अपने पापों का फल भोगने दीजिए ।"

मिथिलेश बोले, "देवेन्द्र ! यदि मेरे संग से इनका कुछ भला न हुआ, तो मेरे पुण्य-कर्म व्यर्थ हैं । यदि मैंने सचमुच कोई सत्कर्म या पुण्य-कर्म किए हैं, तो उनके फल से ये सब पापी नरक से छूट जाएँ—नरक से इन्हें छुटकारा मिल जाए ।" इतना कहकर मिथिलेश ने आँखें बन्द कर लीं और मन-ही-मन भगवान से पीड़ितों का दुःख दूर करने की प्रार्थना करने लगे।

"तथास्तु"

तथास्तु का शब्द सुनकर महाराज नें आँखें खोलीं । इन्द्र और धर्मराज अब वहाँ नहीं थे । आकाश से पुष्प-वर्षा हो रही थी। जो स्थान कुछ देर पहले भयंकर नरक था, वह अब अत्यन्त मनोहर बन गया था ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

16

जिन पर हमें गर्व है

ऐसा कौन भारतीय होगा जो महान भौतिक शास्त्री श्री जगदीशचन्द्र बोस के नाम से परिचित न हो। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ तक यह विश्वास किया जाता था कि भारतवासी वैज्ञानिक प्रतिभा से वंचित हैं किन्तु इस विश्वास को झुठलाकर सर जगदीशचन्द्र बोस ने यह सिद्ध कर दिया कि विज्ञान के क्षेत्र में भारतवासी किसी से भी कम नहीं हैं। उन्होंने सन् 1895 में देश के उत्कृष्ट भौतिक शास्त्री के रूप में प्रसिद्धि पाई जबकि कलकत्ता में अपने एक सार्वजनिक भाषण के दौरान विद्युत लहरों को अपने रेडिएटर से 85 फीट दूर तक भेजकर उन्होंने दर्शकों को विस्मित कर दिया। हर्ट्ज़ नामक वैज्ञानिक के साथ प्रकाश और विद्युत के सम्बन्ध को प्रकट कर उन्होंने कई आरम्भिक यन्त्र बनाए जिससे आधुनिक ब्राडकास्टिंग का विकास हुआ। आज घर-घर में रेडियो की पहुँच है। इसका बहुत कुछ श्रेय बोस और हर्ट्ज़ के आविष्कारों को ही है।

श्री बोस का जन्म 30 नवम्बर, 1858 ई० में पूर्वी बंगाल के ढाका जिले में (जो बंगला देश की राजधानी है) राढ़ाखाल नामक ग्राम में हुआ था।

बचपन से ही बोस महोदय की रुचि जीव-जन्तुओं की ओर थी। अपने गाँव में वे बहते हुए झरने के किनारे बैठे रहते और घंटों मछलियों और जलसर्पों को पकड़ते तथा उनके साथ खेल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करते रहते थे। कलकत्ता में सेंट ज़ेवियर कालेज में पढ़ते समय भी वे पालतू पशुओं की देख-रेख करने में अपना बहुत-सा धन व्यय करते थे।

उन दिनों कलकत्ता विश्वविद्यालय में जीव-शास्त्र विषय की शिक्षा की व्यवस्था नहीं थी। अतः जीवशास्त्र में रुचि होते हुए भी बोस बाबू को सेंट ज़ेवियर में ग्रेज्युएशन कोर्स के लिए भौतिकी को अपना विषय चुनना पड़ा। किन्तु जीवित प्राणियों के प्रति नैसर्गिक प्रेम उनमें प्रबल था इसलिए इंग्लैंड में उन्होंने अपने अध्ययन के लिए जीव-शास्त्र विषय को ही चुना। परन्तु भाग्य ने साथ न दिया। बोस बाबू पहले से ही कालाज़ार से पीड़ित थे और अध्ययन हेतु औषधियों तथा शल्यकक्ष की गन्ध से उनकी बीमारी और बढ़ गई। अन्त में डाक्टरों की सलाह पर उन्हें जीव-शास्त्र के अध्ययन को तिलाञ्जलि देनी पड़ी। अब भौतिकी की ओर ही उन्होंने अपना ध्यान केन्द्रित किया। लन्दन से बी० एस-सी० की परीक्षा उत्तीर्ण कर बोस महोदय भारत लौटे।

भारत में प्रेसीडेन्सी कालेज, कलकत्ता में उन्होंने भौतिक-विज्ञान के अध्यापक के रूप में कार्य किया और साथ ही वैज्ञानिक अनुसन्धान कार्य में संलग्न हुए। सर्वप्रथम उन्होंने बिजली की अदृश्य किरणों के विकिरण-संबंधी कुछ आविष्कारों से संसार को आश्चर्यचकित कर दिया। इन आविष्कारों में कुछ वायर-लैस—बेतार के तार—संबंधी थे। श्री बोस ने विद्युत् सम्बंधी अनुसन्धान करते समय पाया कि बिजली की धारा के प्रति प्रतिक्रिया केवल जीवित प्राणियों में ही नहीं होती, अपितु निर्जीव व जड़ पदार्थों में भी यह प्रतिक्रिया पाई जाती है। उन्होंने देखा कि जड़ पदार्थों में भी यदि बाहर से उत्तेजना दी जाय तो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रत्युत्तर मिलता है। कुछ विशेष उत्तेजक द्रव्यों का प्रयोग करने पर प्रत्युत्तर की यह शक्ति बहुत बढ़ जाती है। परन्तु कुछ विषैले द्रव्य देने पर यह प्रत्युत्तर एकदम बन्द हो जाता है। जड़ और चेतन में होने वाली प्रतिक्रिया में विपरीतता कम और समानता अधिक है।

वनस्पतियाँ पृथ्वी से उत्पन्न होती हैं। वृक्ष इत्यादि हिलते-डुलते व फलते-फूलते हैं। अतः वे पत्थर, मिट्टी आदि जड़-पदार्थों से अलग हैं। किंतु हिलने-डुलने पर भी वे अचल माने जाते हैं क्योंकि जीवधारियों की भाँति वे चलने-फिरने में समर्थ नहीं। अन्य प्राणियों की तरह उसके अंग-प्रत्यंग में स्पन्दन नहीं दीख पड़ता। बोस महोदय ने उद्भिज संसार का अध्ययन किया और पाया कि चारों ओर की परिस्थितियों का जन्तुओं पर विशेष प्रभाव पड़ता है और वृक्ष आदि वनस्पतियाँ भी इसके अपवाद नहीं। उन्होंने खोजा कि आघात पाकर वृक्ष इत्यादि भी उसी प्रकार पीड़ा का अनुभव करते हैं जिस प्रकार मानव या पशु-पक्षी आदि सजीव प्राणी। किंतु हम अपने बाह्य नेत्रों से उनकी पीड़ा को देख नहीं पाते।

बोस महाशय ने कुछ ऐसे यन्त्रों का आविष्कार किया जो सूक्ष्म बातों को भी ग्रहण कर सकें। अणुवीक्षण यन्त्र सूक्ष्म वस्तुओं को बड़ा बनाकर दिखा सकता है। सबसे अधिक शक्तिशाली अणुवीक्षण यन्त्र किसी वस्तु को अपने वास्तविक आकार से तीन हजार गुना तक बड़ा करके दिखा सकता है किंतु वृक्षों का स्पन्दन अणवीक्षण यन्त्र की सहायता से भी नहीं देखा जा सकता। श्री जगदीश चन्द्र बोस ने 'मैगनेटिक केस्कोग्राफ' नामक यन्त्र का आविष्कार किया। इसके द्वारा किसी भी गति को एक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करोड़ अधिक बड़ा देखा जा सकता है। यह यन्त्र पेड़-पौधों में होने वाली गति को भी प्रत्यक्ष दिखा सकने में समर्थ हैं। इस प्रकार नई प्रयोगात्मक विधियों की सहायता से श्री बोस ने पौधों पर निद्रा, वायु, प्रकाश, थकान आदि का प्रभाव दिखाने के लिए अनेक सम्वेदनशील यन्त्र बनाए! उनका 'रेजोनेण्ट रिकार्डर' यन्त्र एक सेकण्ड के हजारवें भाग तक को सूचित कर देता है। इसके द्वारा वृक्षों में दौड़ाने वाली उत्तेजना की गति मापी जा सकती है। 'फाइटोग्राफ' यन्त्र के द्वारा वृक्षों की अनुभूति के संचालन की नाप-जोख की जा सकती है। वृक्ष बड़े संवेदनशील होते हैं। बोस महोदय ने अपने 'इनफिनटेजिमल कांट्रेक्शन रेकार्ड' यन्त्र द्वारा परीक्षण करके यह दिखा दिया कि वृक्षों के कोषाणुओं में वैसा ही संकुचन होता है जैसा हमारे शरीर के कोषाणुओं में होता है।

आपरेशन के लिए कोकेन का इंजेक्शन शरीर को सुन्न करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। इस प्रक्रिया को 'फिज़ियालाजिकली ब्लाक' कर देना कहते हैं। अधिक शीत से भी अंग सुन्न पड़ जाते हैं। बोस महोदय ने वृक्षों में भी यह क्रिया देखी। अत्यधिक शीत या क्लोरोफार्म जैसी औषधि देने से या विष का प्रयोग करने से वृक्षों में भी अनुभूति का संचालन रुक जाता है। श्री बोस ने 'ओसिलेटिंग रिकार्डर' नामक यन्त्र से यह सिद्ध कर दिखाया कि प्राणियों के शरीर में जिस प्रकार नाड़ी स्पन्दन होता है वैसे ही वृक्षों में भी होता है।

रस का संचालन वृक्षों के जीवन में उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि जीवित प्राणियों के शरीर में रक्त का संचालन। वृक्षों की वृद्धि की गति इतनी सूक्ष्म है कि उसका पता चलाना कठिन है। यह गति लगभग 1/100000 इंच प्रति सेकण्ड होती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। डॉक्टर बोस के 'केस्कोग्राफ' की सहायता से इसका ज्ञान भी सरलतापूर्वक प्राप्त किया जा सकता है।

इन आविष्कारों के द्वारा श्री जगदीशचन्द्र बोस ने वृक्षों के शरीर-विज्ञान के सम्बन्ध में क्रान्तिकारी परिवर्तन किए। उन्होंने अपनी समस्त सम्पत्ति देकर 1917 ई० में कलकत्ता में 'बोस अनुसन्धान संस्थान' की स्थापना की और जीवन के अन्त तक वे इसके निदेशक रहे। वह विज्ञान मन्दिर सर जगदीशचन्द्र बोस की अमर कीर्ति का सूचक है। वियना विश्वविद्यालय के डाइरेक्टर प्रोफेसर मोलिस ने इन संस्थान की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

डॉक्टर बोस जीवन के अन्तिम समथ तक विज्ञान सम्बन्धी प्रयोगों में ही लगे रहे। वास्तव में विज्ञान ही उनका जीवन था। सन् 1936 में बीमार अवस्था में वे वायु परिवर्तन के लिए गिरिडीह चले गए किन्तु वहाँ भी स्वास्थ्य में सुधार न हो सका। गिरिडीह में ही 23 नवम्बर, 1937 में उनका देहान्त हुआ। जीवन के अन्तिम काल में उन्होंने विज्ञान के अनुसंधान कार्य के हेतु संस्थान को 15 लाख की सम्पत्ति दान की।

उनकी मत्यु पर सर माइकेल सेडलर ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा, "वे प्राणिशास्त्रियों में कवि थे।" बोस महोदय जीवन-भर शिक्षा और विज्ञान की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहे। उदार हृदय बोस अपनी आय का अधिकांश निर्धन विद्यार्थियों की सहायता के लिए विद्या संस्थाओं को दान करते रहते थे। लोभ उन्हें छू तक न गया था। अपने एक हितैषी मित्र के आग्रह पर भी उन्होंने अपने आविष्कृत यन्त्रों को पेटेण्ट नहीं कराया। उनकी विज्ञान सम्बन्धी सेवाओं के फलस्वरूप

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उन्हें रॉयल सोसायटी का फैलो बनाया गया। निश्चय ही वे उस गौरव के अधिकारी थे। उनकी महान सेवाओं से प्रभावित होकर सरकार ने उन्हें 'सर' की उपाधि से प्रतिष्ठित किया।

विज्ञान और समाज की निःस्वार्थ भाव से सेवा करने वाले डॉ० बोस भारत माता के सच्चे सपूत थे जिन्हें उनके देशवासी सदा आदर के साथ याद करते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

17

विराट की रक्षा

(1)

विराट के सेनापति कीचक की मृत्यु का समाचार दूर-दूर तक फैल गया। कौरवों ने भी जब यह समाचार सुना, तो उन्होंने सोचा कि उसके मरने से विराट की शक्ति बहुत कम हो गई है। उन्होंने अच्छा अवसर जानकर विराट नगर पर चढ़ाई कर दी।

सबसे पहले सुशर्मा ने विराट नगर की गोचर भूमि को जा घेरा। वहाँ के रखवालों को मारपीट कर वह हजारों गौओं को छीनकर ले गया। गोपालकों ने गौएँ छीने जाने की सूचना महाराज विराट को दी।

महाराज विराट तुरन्त ही सैन्य सजाकर सुशर्मा को दण्ड देने और गौएँ छीनकर वापस लाने के लिए चल पड़े। दोनों में घमासान युद्ध हुआ। अन्त में सुशर्मा की जीत हुई और वह राजा विराट को भी बन्दी बनाकर ले गया।

कंक के रूप में छिपे युधिष्ठिर ने जब यह सुना कि महाराज विराट को सुशर्मा पकड़कर ले गया, तब उन्होंने भीम, नकुल और सहदेव को बुलाकर कहा, "देखो, जिसकी छत्रछाया में हमने अज्ञातवास के इतने दिन सुख से बिताए हैं, हमारे सामने उसी की ऐसी दुर्दशा हो, यह हमारे लिए अत्यन्त लज्जा और कलंक की बात है। तुम तीनों भाई अभी जाओ और प्राणपण से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यत्न करके महाराज विराट को छुड़ा कर लाओ।"

बड़े भाई युधिष्ठिर की आज्ञा से भीमसेन ने नकुल तथा सहदेव को साथ लेकर सुशर्मा का पीछा किया। भीम की सेना ने सुशर्मा को पराजित करके राजा विराट को छुड़ा लिया और साथ ही गौएँ भी छुड़ा लीं।

राजा विराट अभी राजधानी में भी नहीं पहुँच पाए कि दुर्योधन ने भीष्म, कर्ण आदि की सहायता से विराट नगर पर दूसरी ओर से आक्रमण कर दिया। उन्होंने भी बहुत-सी गौएँ अपने अधिकार में कर लीं। कौरवों के इस आक्रमण की सूचना राजमहल में पहुँची। परन्तु वहाँ अब कौन था जो शत्रुओं का सामना करता? महाराज विराट तो पहले ही सुशर्मा द्वारा बन्दी बना लिए गए थे। भीम, नकुल तथा सहदेव धर्मराज युधिष्ठिर की आज्ञा से महाराज को छुड़ाने गए थे। इस समय महलों में केवल राजकुमार उत्तर मौजूद था; परन्तु उसका रथ हाँकने वाला कोई न था।

अन्तःपुर में इस बात की चर्चा हो रही थी कि इतने में बृहन्नला (अर्जुन) के संकेत से सैरन्ध्री (द्रौपदी) ने आकर कहा, "बृहन्नला, जो राजकुमारियों को नाच-गान सिखलाता है, रथ हाँकना बहुत अच्छी तरह जानता है। मैंने इसे महाराज युधिष्ठिर के यहाँ अनेक बार रथ हाँकते देखा था। यदि राजकुमार उत्तर युद्ध में जाना चाहें, तो बृहन्नला को सारथी बनाकर ले जाएँ।"

सैरन्ध्री (द्रौपदी) के कथन के अनुसार अर्जुन (बृहन्नला) से पूछा गया, तो वह रथ हाँकने के लिए सहर्ष तैयार हो गया। तुरन्त रथ सजाया गया और राजकुमार उत्तर एवं बृहन्नला (अर्जुन) सारथी युद्धभूमि के लिए चल पड़े।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(2)

राजकुमार उत्तर ने रणभूमि में पहुँचकर टिड्डी-दल की तरह फैली हुई कौरव-सेना देखी, तो उसका साहस छूट गया। उसने अर्जुन से रथ लौटाने के लिए कहा। अर्जुन ने कहा, "राजकुमार, क्षत्रिय-पुत्र होकर ऐसे कायर बनते हो ? क्या सच्चे राजकुमार इसी तरह युद्ध में पीठ दिखाकर भागा करते हैं ? तुम्हारी बहन उत्तरा तो तुम्हारी वीरता की बड़ी डींग मारा करती थी ! तुम्हारी वह वीरता अब कहाँ गई ?"

अर्जुन की इस ललकार का कुमार उत्तर पर कुछ प्रभाव न हुआ। वह बार-बार रथ लौटाने का आग्रह करने लगा। परन्तु वीर अर्जुन युद्ध से कब पीछे हटने वाला था ? बार-बार कहने पर भी अर्जुन ने जब रथ न लौटाया, तो उत्तर रथ से उतरकर भाग चला। अर्जुन ने भागते हुए राजकुमार को पकड़-कर कहा, "रे कायर ! यदि प्राणों का इतना ही मोह था, तो वहाँ स्त्रियों के आगे इतनी शेखी बघार कर तू युद्ध के लिए क्यों आया था ? ठहर ! यदि तू युद्ध नहीं कर सकता, तो रथ हाँक, मैं शत्रुओं से लड़ूँगा।"

किन्तु जब उत्तर रथ हांकने के लिए भी राजी न हुआ, तो अर्जुन ने उसे बलपूर्वक सारथी की जगह पर रथ के डण्डे के साथ बाँध दिया। और कहा, "मैं अर्जुन हूँ। मेरे अन्य चारों भाई भी नाम व वेश बदलकर विराट नगर में अज्ञातवास की अवधि बिता रहे हैं। तू निश्चित बैठा रह। मैं कौरवों को अभी सारा मजा चखाए देता हूँ। किन्तु याद रख अगर तूने भागने की चेष्टा भी की, तो उसी क्षण मेरे तीखे बाण तेरे प्राणों का हरण कर लेंगे।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसी समय अर्जुन शमी (जंडी) के एक पेड़ पर जा चढ़ा। वहाँ से उसने अपना गांडीव धनुष और अमोघ बाण उतारे। विराटनगर जाने से पहले अर्जुन उन्हें इसी पेड़ पर छिपा गया था। अर्जुन ने हथियारों को झाड़-पोंछ कर ठीक किया। फिर रथ में बैठकर उसने अपना शंख बजाया। शंखध्वनि सुनते ही कौरव-सेना चौंकन्नी होकर अर्जुन के रथ की ओर देखने लगी। इसी समय अर्जुन ने अपने गांडीव धनुष की टंकार की। उसका भीषण घोष सुनकर शत्रुओं के हृदय काँप उठे। वे लोग परस्पर कहने लगे कि यह शंखध्वनि तो अर्जुन के देवदत्त नामक शंख की ध्वनि से मिलती-जुलती है और धनुष की टंकार तो सर्वथा गांडीव जैसी है! क्या अर्जुन ही युद्ध करने आ गया है?

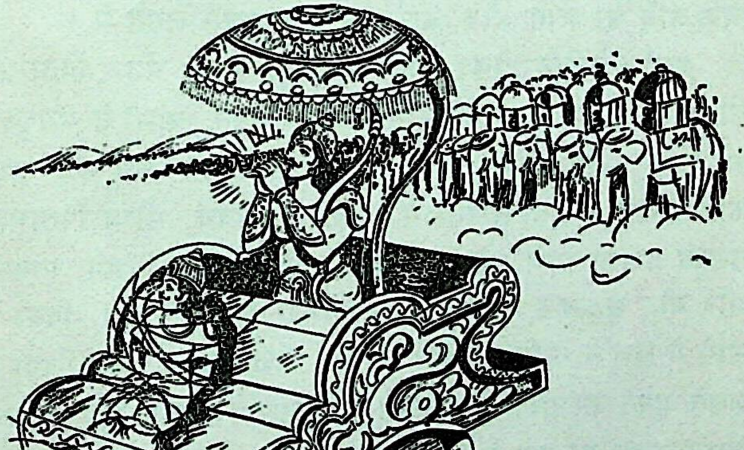

इस प्रकार कौरव लोग भयभीत होकर परस्पर पूछताछ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर ही रहे थे कि अर्जुन का रथ धड़धड़ाता हुआ उनकी सेना के सामने आ पहुँचा। अर्जुन को देखते ही दुर्योधन प्रसन्नता से उछल पड़ा और कहने लगा—"पांडव बारह वर्ष के बनवास के बाद एक वर्ष की अज्ञातवास की अवधि पूरी किए बिना ही प्रकट हो गए, इसलिए अब उन्हें बारह वर्ष का बनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास फिर भोगना पड़ेगा—यही शर्त निश्चित हुई थी।"

दुर्योधन की बात सुनकर भीष्म ने उसे अपने पास बुलाया तथा गणना करके बताया कि पांडवों को तेरह वर्ष से भी पाँच महीने अधिक हो गए हैं। यह सुनकर तो दुर्योधन के मुख पर उदासी छा गई।

अर्जुन कौरव-सेना में दुर्योधन को खोज रहा था। परन्तु कर्ण, कृपाचार्य, भीष्म, अश्वत्थामा आदि दुर्योधन को पीछे करके स्वयं आगे आ जाते और अर्जुन से युद्ध करने लगते थे।

अर्जुन ने क्रुद्ध होकर गर्जन करते हुए केवल भीष्म पितामह को छोड़कर शेष सभी महारथियों को अपने बाणों से व्याकुल कर दिया। तब भीष्म आगे आए और लगे अर्जुन से युद्ध करने। अर्जुन ऐसी वीरता से लड़ा कि स्वयं भीष्म पितामह उसकी प्रशंसा करने लगे। अन्त में कौरवों पर विजय पाकर और गौएँ छुड़ाकर अर्जुन विराट नगर की ओर चल दिया। मार्ग में अर्जुन ने फिर बृहन्नला का वेश धारण कर लिया। उसने अपने शस्त्रास्त्र फिर उसी शमी वृक्ष पर छिपा दिए। फिर उसने उत्तर को रथ से खोलकर कहा—"अपने पिता से यह मत कहना कि बृहन्नला का वेश धारण किए अर्जुन है। नगर में चलकर यही कहना कि तुम्हीं ने कौरवों को हराकर गौएँ छुड़ाई हैं।"

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुमार उत्तर और बृहन्नला (अर्जुन) विराट नगर में पहुँचे। भीमसेन राजा विराट को और गौओं को छुड़ाकर पहले ही आ चुके थे। सब आपस में बहुत प्रसन्नता से मिले और एक-दूसरे की विजय का समाचार सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। इसी समय युधिष्ठिर ने जो रसोइया कंक बना हुआ था, राजा विराट से अपने अज्ञातवास की सारी कथा विस्तार से कह सुनाई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

18

वीरता का सम्मान

स्थान : (ग्रीक सम्राट सिकन्दर का सैनिक शिविर। बीच में ऊँचे आसन पर सिकन्दर विराजमान है। उसके दाईं ओर कुछ ही दूरी पर एक साधारण आसन पर तक्षशिला का राजा आम्भी बैठा है। सिकन्दर के बाईं ओर दो यूनानी सैनिक खड़े हैं।)

सिकन्दर : महाराज आम्भी ! हमें आप जैसा मित्र पाकर बहुत खुशी हुई है। यदि आप समय पर हमारी सहायता न करते तो हम पुरुराज पर विजय नहीं पा सकते थे। हमारा भारत विजय का सपना कभी पूरा न होता। इस सहायता के लिए हम आपके आभारी हैं।

आम्भी : महाराजाधिराज, यह तो मेरा परम सौभाग्य है कि आपने मुझे सेवा का अवसर देकर कृतार्थ किया। यह सेवक तो आपकी कृपा के लिए कृतज्ञ है।

(सैनिक वेश में द्वार रक्षक का प्रवेश)

द्वार रक्षक : (प्रवेश करके) महाराज की जय हो ! महाराज पुरु को बन्दी बनाकर सेनापति उन्हें आपकी सेवा में प्रस्तुत करने की आज्ञा चाहते हैं।

सिकन्दर : आज्ञा है। पुरुराज को शीघ्र लाया जाय।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वार रक्षक : जो आज्ञा महाराज !

(जाता है ।)

सेनापति : (प्रवेश करके)—महाराज की जय हो !

पुरुराज : मैं भारत-वीर पुरु यूनान नरेश को अभिवादन करता हूँ ।

आम्भी : अरे अपने को भारत-वीर कहते हुए लज्जा नहीं आती पुरु ।

पुरुराज : वीरता वीरभाव में है आम्भी ? मैंने युद्ध में शक्ति-भर पराक्रम दिखाया । तुम्हारी तरह शत्रु के सम्मुख आत्मसमर्पण नहीं किया । तुम जैसे देशद्रोही को इतिहास कभी क्षमा नहीं करेगा ।

सिकन्दर : किंतु इस समय तो तुम बंधन में हो !

पुरु (महाराज वीर के लिए बंधन और मरण अथवा जय और पराजय बराबर है । मैंने अपना कर्तव्य किया, फल की इच्छा मुझे नहीं ।)

आम्भी : महाराज यह बहुत वाचाल है । सेनापति को इसका वध करने की आज्ञा दीजिए ।

सिकन्दर (आम्भी की बात अनसुनी करके) यदि मैं तुम्हारे साथ मित्रता करना चाहूँ तो क्या तुम स्वीकार करोगे पुरुराज !

पुरु : सन्धि करना भी राजद्रोह है जो मैं कभी स्वीकार नहीं करूँगा । मेरा देश भारत एक राष्ट्र है जहाँ अनेक राज्य हैं । मुझसे मैत्री करके आप अन्य राज्यों पर विजय पाना चाहते हैं सम्राट ! आम्भी इसका प्रमाण है ।)

आम्भी : तुम मेरा अपमान कर रहे हो पुरु ! सावधान ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुरु : क्या एक दास का भी मान-अपमान होता है ?

सिकन्दर : पुरुराज आप भारत को एक राष्ट्र मानते हैं ! आपका यह विचार उचित नहीं माना जा सकता। यदि ऐसा होता तो यहाँ परस्पर राजा एक-दूसरे से शत्रुता क्यों करते ?

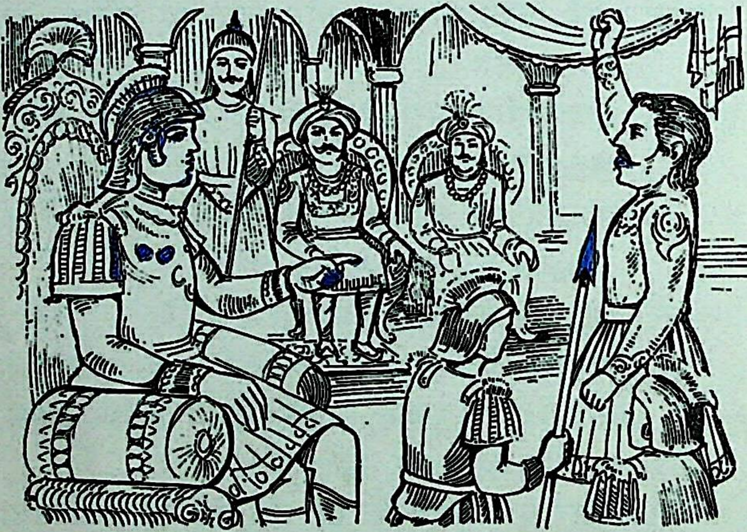

पुरु : यूनान नरेश ! थह सब कुछ हमारा आन्तरिक विषय है। क्या परिवार के सब सदस्य एक मत के हो सकते हैं ? उनमें विचारों की विभिन्नता हो सकती है.। उसी प्रकार इस विशाब राष्ट्र में भाषा और धर्म की भिन्नता होना असम्भव नहीं। तो भी उत्तर में हिमालय से दक्षिण में समुद्र तक विस्तृत भूमि पर निवास करने वाले सब मनुष्य भारत की ही सन्तान हैं।

सिकन्दर : तब तो भारत पर विजय पाना मेरे लिए कठिन है।

पुरु : कठिन ही नहीं, असम्भव है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिकन्दर : क्या कहते हो ? तुम्हें पता है कि तुम किससे बात कर रहे हो ?

पुरु : जानता हूँ महाराज ! मेरी बात आपको कड़वी लगती है, पर सत्य सदा कड़वा ही होता है। प्रिय लगने वाले और साथ ही हितकारी वचन दुर्लभ होते हैं। इसलिए आपको प्रसन्न करने के लिए मैं असत्य बोलूँ—यह सम्भव नहीं।

(आम्भी कुछ कहना चाहता है पर सिकन्दर उसे रोक देता है।)

सिकन्दर : (कुछ सोचकर) पुरुराज, आपकी सत्यवादिता से हम प्रसन्न हैं। इस समय आप हमारे बन्दी हैं, बताइए हम आपके साथ कैसा व्यवहार करें।

पुरु : वही जो एक राजा दूसरे राजा से करता है।

सिकन्दर : खूब...! पुरुराज, आप निस्सन्देह वीर हैं और सिकन्दर वीरता का सम्मान करता है। हम आपको बन्धन-मुक्त करते हैं। आज से हम दोनों मित्र हुए।

(सेनापति को पुरु के बन्धन खोलने की आज्ञा देता है। सेनापति आगे बढ़कर बन्धन खोल देता है। सिकन्दर आगे बढ़कर पुरुराज को गले लगाता है।)

पुरु : महाराज, आप से मित्रता करके मैं अनुगृहीत हुआ।

आम्भी : मुँह बनाकर एक-एक कर दोनों की ओर देखता रह जाता है।

(पर्दा गिरता है।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब बताओ

पाठ 1

1. विवाह के वाद राजकुमार अमर सिंह ने सुभद्रा को अलग महल में क्यों रखा ?
2. मन्दिर में राजकुमारी सुभद्रा ने भगवान् से क्या प्रार्थना की ?
3. सुभद्रा ने अपने पिता को पत्र लिखकर क्या मांग की ?
4. सिंह का अन्त किस प्रकार हुआ ?
5. रत्नसिंह ने राजकुमार अमरसिंह को कैसे छुड़ाया ?

पाठ 2

1. चिकित्सालय की संचालिका जॉन मेरी ने देवी को अस्पताल से क्यों निकाल दिया ?
2. देवी समाज में 'देवी माई' के नाम से किस लिए प्रसिद्ध हुई ?
3. जॉन मेरी ने देवी माई का अस्पताल देखकर क्या कहा ?
4. अपनी भूल सुधारने के लिए जॉन मेरी ने क्या किया ?

पाठ 3

1. मछलियों के कितने नेता थे और उनके नाम क्या थे ?
2. रक्षा के लिए अनागत विधाता ने क्या राय दी ?
3. नियति पर विश्वास करने वालों का क्या परिणाम होता है ?
4. विद्यालय को जलाशय के रूप में किस प्रकार माना जा सकता है ?

पाठ 4

1. अनार सिंह को देश निकाला क्यों दिया गया ?
2. राजवाला ने अजीतसिंह के सन्देश का क्या उत्तर दिया ?
3. राजसिंह ने शेर को मारने का क्या प्रमाण दिया ?
4. अजीतसिंह ने साहूकार का कर्ज कैसे चुकाया ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाठ 5

1. भारत और पाकिस्तान के बीच हवाई युद्ध कब आरम्भ हुआ ?
2. फ़्लाइट लेफ्टिनेंट राठौर ने कैसे पहचाना कि हलवाड़ा पर हमला हो रहा है ?
3. विमान का एक पंख टूट जाने पर फ्लाइंग-आफिसर गाँधी ने क्या किया ?
4. हलवाड़ा के रक्षकों के नाम बताइए ?

पाठ 6

1. महात्मा पिप्पल की तपस्या का वन के पशुओं पर क्या प्रभाव पड़ा ?
2. सारस ने सुकर्मा की सिद्धि का कारण क्या बताया ?
3. परमात्मा किस प्रकार प्रसन्न होते हैं ?
4. किस प्रकार के व्यक्ति के जीवन का उद्धार-उत्थान नहीं होता ?

पाठ 7

1. दक्षिण ध्रुव कहाँ है और इस स्थान की क्या विशेषता है ।
2. दूसरी बार दक्षिण ध्रुव की खोज में कप्तान स्कॉट के साथ कौन-कौन गए ?
3. बीमार होने पर कप्तान ओइट्स ने अपने साथियों से क्या कहा ?
4. कप्तान स्कॉट ने अपनी यात्रा का हाल डायरी में क्यों लिखा ?

पाठ 8

1. नेताजी के सेनापति ने हर घर से क्या माँग की थी ? यह माँग किस लिए की गई थी ?
2. बेटे को माँ की रक्षा की चिन्ता थी । उस चिन्ता को माँ ने किस प्रकार दूर किया ?
3. सेना में भर्ती न होने पर युवक को निराशा क्यों हुई ?
4. मरते समय माँ ने अपने बेटे से क्या कहा ?
5. कर्नल ने युवक की मृत माता के प्रति किस प्रकार सम्मान प्रकट किया ? माँ के किस गुण पर उन्हें गर्व का अनुभव हुआ ?

पाठ 9

1. इंग्लैंड की सरकार ने साइमन कमीशन को भारत किस लिए भेजा ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

2. साइमन कमीशन का बहिष्कार किस लिए किया गया ?
3. निर्दोष भीड़ पर लाठियाँ बरसाने वाली सरकार के बारे में लाला लाजपतराय ने क्या घोषणा की ?
4. लाला लाजपतराय की मौत का बदला, लेने का काम किसे सौंपा गया ?

पाठ 10

1. शत्रुओं से चन्द्रहास की रक्षा और उसका पालन-पोषण किसने किया ?
2. धृष्टबुद्धि ने चन्द्रहास को क्यों मरवाना चाहा ?
3. हत्यारे ने धृष्टबुद्धि से इनाम कैसे पाया ?
4. राजा कुलिन्दक को चन्द्रहास कैसे मिला ?
5. चन्द्रहास का विषया के साथ विवाह कैसे हुआ ?

पाठ 11

1. राजा विक्रमादित्य ने ब्राह्मण को एक हजार स्वर्ण मुद्रायें क्यों दान कीं ?
2. राजा विक्रमादित्य के पास से स्वर्ण-मुद्राओं की थैली कैसे गायब हो गई ?
3. पेड़ के नीचे सोये हुए भिखारी जैसे दिखाई देने वाले विक्रमादित्य को सिपाहियों ने क्यों पकड़ लिया ?
4. तेलिन के तेल की बिक्री अधिक होने का क्या कारण था ?
5. भिखारी ने बेहोश राजकुमारी को किस प्रकार स्वस्थ किया ?

पाठ 12

1. बालिका इन्दु की शिक्षा का क्रम बार-बार क्यों टूटा ?
2. बचपन में इन्दिरा गांधी ने अंग्रेजों का विरोध किस प्रकार किया ?
3. इन्दिरा गांधी को राजनीति का ज्ञान किस प्रकार हुआ ?
4. पाकिस्तान-भारत युद्ध में श्रीमती इन्दिरा गांधी की क्या उपलब्धियाँ थीं ?
5. जनता सरकार का अन्त किस प्रकार हुआ ?
6. अपने अन्तिम प्रधानमंत्री काल में इन्दिरा गांधी ने क्या-क्या कार्य किए ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाठ 13

1. पापबुद्धि ने अपनी गरीबी दूर करने के लिए क्या उपाय सोचा ?
2. दोनों मित्र अपने साथ सारा धन घर क्यों नहीं ले गए ?
3. धन बचाने के लिए पापबुद्धि ने क्या उपाय किया ?
4. पापबुद्धि के पिता ने वृक्ष के खोखल से क्या कहा ?
5. धर्मबुद्धि ने सचाई किस प्रकार प्रकट की ?

पाठ 14

1. रबिया कौन थी ? उसका बचपन कैसे बीता ?
2. रबिया को गुलामी से छुटकारा कैसे मिला ?
3. सन्त सूफियान की रबिया से क्या बातचीत हुई ?
4. रबिया ने उच्च स्थिति किस प्रकार पाई ?
5. भगवान् की उपासना किस प्रकार करनी चाहिए ?

पाठ 15

1. मिथिलेश ने नरक में क्या दृश्य देखा ?
2. महाराज मिथिलेश के दर्शन से नरक के पापियों को शान्ति क्यों अनुभव हुई ?
3. मिथिलेश ने नरक में ठहरना क्यों पसन्द किया ?
4. मिथिलेश ने इन्द्र से क्या प्रार्थना की ?

पाठ 16

1. आधुनिक ब्राडकास्टिंग के विकास में बोस और हर्ट्ज ने क्या किया ?
2. परिस्थितियों का वृक्ष आदि वनस्पतियों पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
3. मैगनेटिक कैस्कोग्राफ का क्या काम है ?
4. श्री जगदीशचन्द्र बोस ने किन-किन यन्त्रों का आविष्कार किया ?
5. श्री बोस को विज्ञान-सम्बन्धी सेवाओं का क्या पुरस्कार मिला ?

पाठ 17

1. बन्दी विराट को छुड़ाने के लिए युधिष्ठिर ने अपने भाइयों से क्या कहा ?
2. निरुत्साहित राजकुमार उत्तर को अर्जुन ने युद्ध भूमि में ले जाने के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लिए किस प्रकार उत्साह दिलाया ?
3. अर्जुन के शंख की ध्वनि सुनकर कौरव सेना पर क्या असर हुआ ?
4. अर्जुन को देखकर दुर्योधन प्रसन्न क्यों हुआ ?
5. युद्ध से लौटते समय अर्जुन ने राजकुमार उत्तर से क्या कहा ?

पाठ 18

1. सिकन्दर पुरु पर विजय पाने के बाद आम्भी से क्या कहता है ?
2. पुरुराज ने आम्भी को देश-द्रोही क्यों कहा ?
3. सिकन्दर पुरु से क्यों खुश हुआ ?
4. सिकन्दर ने वीरता का सम्मान किस प्रकार किया ?

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमारे प्रकाशन

1. नवीन अक्षर भारती
2. भाषा अक्षर बोध
3. भाषा शब्द बोध
4. भाषा स्वर बोध
5. क ख ग चित्रावली
6. भाषा शब्द चित्रावली
7. भाषा स्वर चित्रावली
8. नन्हें मुन्ने गीत
9. रसीले गीत
10. निराले गीत
11. अक्षर गीत
12. भाषा बोध – 1 से 5
13. नवीन भारती-1 से 8
14. कार्य पुस्तिका-नवीन भारती 1 से 8
15. आओ हिन्दी सीखें भाग 1 से 8
16. अभ्यास माला – बाल भारती 1 से 5 (एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्य पुस्तक पर आधारित)
17. अभ्यास माला – किशोर भारती 1 से 3 (एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्य पुस्तक पर आधारित)
18. राष्ट्र भाषा व्याकरण
19. सचित्र व्याकरण बोध तथा रचना
20. अभिनव हिन्दी व्याकरण तथा रचना
21. सरल वाक्य रचना
22. भाषा निबन्ध तथा रचना
23. निबन्ध सरोज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

6	17	c
7	18	
8	19	3
9	20	4
10	24	5
11	22	6
12	7	
13	8	
14	9	
15	10	
16	11	
17	12	

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri